समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

पाक्षिक

प्रज्ञा अभियान

संस्थापक, संरक्षक : युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

1 अक्टूबर 2019

वर्ष : 32, अंक : 07

प्रकाशन स्थल : शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार

प्रकाशन तिथि : 27 सितम्बर 2019

वार्षिक चंदा : ₹ 60/-

वार्षिक चंदा (विदेश) : ₹ 800/-

प्रति अंक : ₹ 3/-

E-mail: news.shantikunj@gmail.com RNI-NO.38653/ 80 Postel R.No.UA/DO/DDN/ 16 / 2018-20 Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2018-20

घर-घर पहुँच रहे हैं गायत्री माता और यज्ञ भगवान 3

रेलवे का आदेश पारित
दक्षिण पूर्व रेलवे के स्टेशनों पर लगाए जा सकते हैं मिशन के सद्वाक्य 4

महाराष्ट्र और कर्नाटक में चल रहे बाढ़ राहत कार्य 7

शिक्षक दिवस
सबसे बड़ा धर्म है उत्कृष्ट व्यक्तित्वों का निर्माण
श्रद्धेय डॉ. प्रणव जी 8

मुट्ठीभर कर्मयोगी बच्चों की

परम वंदनीया माताजी को विशिष्ट श्रद्धांजलि

24 लाख लोगों तक पहुँचाएँगे प्रज्ञा अभियान

श्री देवव्रत साहा राय के नेतृत्व में ज्ञानयज्ञ के लिए समर्पित लगभग 50 कार्यकर्त्ताओं की टोली **'जन्म शताब्दी वर्ष-2026'** तक प्रज्ञा अभियान के माध्यम से 24 लाख लोगों को मिशन का परिचय कराएगी। यह कोरा संकल्प नहीं है, पिछले 20 वर्षों से किए जा रहे ज्ञानयज्ञ के अनुभव के आधार पर बनाई गई सुनिश्चित योजना है। उल्लेखनीय है कि प्रयागराज के इन्हीं प्राणवान परिजनों ने गतवर्ष पूरे देश में 21,000 लोगों को प्रज्ञा अभियान की वार्षिक सदस्यता अपनी ओर से दिलाई थी।

योजना यह है -

- यह टीम प्रातःकाल प्रयागराज के विभिन्न रेलवे स्टेशन, बस स्टैण्ड एवं सार्वजनिक स्थानों पर प्रज्ञा अभियान व अन्य साहित्य बाँटने जाती है।
- इस वर्ष 15000 से लेकर 24000 तक प्रज्ञा अभियान हर 15 दिन में यात्रियों में निःशुल्क बाँटे जायेंगे। इसके साथ पुरानी अखण्ड ज्योति, युग निर्माण योजना एवं अन्य छोटी पुस्तकें भी बाँटी जाएँगी।
- यह क्रम सन् 2026 तक निरंतर चलाया जाता रहेगा, बढ़ते जन-धन के सहयोग के अनुरूप संकल्प का नवीनीकरण होता रहेगा।
- इस ज्ञानयज्ञ का खर्च समर्पित सहयोगियों की टोली वहन कर रही है। श्री सुशील कुमार श्रीवास्तव, से.नि. सहायक लेखाधिकारी अपने माता-पिता स्व. श्रीमती सुशीला श्रीवास्तव एवं श्री विश्वनाथ प्रसाद श्रीवास्तव की स्मृति में 1,20,000 रुपये (2000 पाक्षिक) और अ.वि. गायत्री परिवार प्रयागराज की ज्ञानयज्ञ शाखा 1,20,000 रुपये (2000 पाक्षिक) का सहयोग कर रही है। शेष निम्न सहयोगियों ने 60,000-60,000 रुपये (प्रत्येक 1000 पाक्षिक) का योगदान दिया किया है।

1. डॉ. सुनीत कुमार एम.डी (रेडियोलॉजी), प्रयागराज
2. इं. अभिनव मित्तल-'यात्रा' टूर ऑर्गनाइजर,
3. श्री वेदप्रकाश चैतन्य-जी.एम. ओएनजीसी मुम्बई
4. श्री अशोक कुमार मिश्र-एडीजी, आरडीएसओ लखनऊ
5. इं. एलबी सिंह, आडीएसओ लखनऊ,
6. श्रीमती पूर्णिमा कुमारी-वायुसेना मनौरी, प्रयागराज
7. श्री हरेराम सिंह-एसबीआई, सुलेमसराय, प्रयागराज
8. श्री दिनेश कुमार-निरीक्षक, एनसीआर प्रयागराज
9. श्री देवव्रत साहा राय-अपने माता-पिता की स्मृति में,
10. गायत्री परिवार झूँसी, प्रयागराज
11. गायत्री परिवार रेलगाँव, सूबेदारगंज, प्रयागराज

पृष्ठ 4 भी देखें .....

जीवन संग्राम का विजय पथ

आप जीवन के किसी भी क्षेत्र में प्रवेश कीजिए, पर प्रविष्ट होने से पूर्व यह समझ लीजिए कि यह एक यज्ञ है, अर्थात् पवित्र कार्य है। ईश्वरत्व के सब गुणों की सहायता से ही आप उसमें पूरी उन्नति कर सकते हैं, विकसित हो सकते हैं और पूर्णता की अवस्था में पहुँच सकते हैं।

श्रेष्ठ बनो, आगे चलो

जीवन का कोई भी क्षेत्र क्यों न हो, आपको नेतृत्व करना चाहिए। दूसरे शब्दों में सामान्य की अपेक्षा ऊँचा उठना चाहिए। आपके पास वे तत्त्व अधिक मात्रा में होने चाहिए, जो पथ प्रदर्शकों के पास होते हैं। देश-विदेश के महापुरुषों, नेताओं, समाज-सुधारकों और धार्मिक क्षेत्र में कार्य करने वाले नेताओं के जीवनों का अध्ययन कीजिए। आप पायेंगे कि जीवन यज्ञ में सफलता प्राप्त करने वाले वे ही व्यक्ति हैं, जिनमें साधारण की अपेक्षा अधिक ज्ञान था और जिन्होंने सफलता-विज्ञान का विशेष अध्ययन किया था।

हरवर्ट कैसन नामक लेखक ने अपनी पुस्तक ''नेतृत्व के लिए उपयोगी सूत्र'' में लिखा है, ''नेतृत्व स्वयं अपने आप में शास्त्र है। इसमें सफलता के लिए मनुष्य में साधारण की अपेक्षा अधिक गुण होना चाहिए। इसकी शैली और सिद्धि का तरीका भी अलग है। अन्य कलाओं की तरह जीवन की इस उपयोगी कला को भी सीखा जा सकता है। यह सब कलाओं की सिरमोर कला है।'' उसी पुस्तक में कैसन साहब ने लिखा है कि दैवी गुणों (जिन्हें गीता में दैवी सम्पदा कहा गया है) का विकास करने से मानवता की वृद्धि होती है, और जीवन कृतार्थ बनता है, मनुष्य उन्नति करता है।

जीवन-उद्देश्य सुनिश्चित हो

संसार में ऐसा कोई नहीं है जो अन्धाधुन्ध आगे बढ़ता रहे। प्रत्येक महान व्यक्ति ने अपनी सेवा या उन्नति का एक क्षेत्र चुना। यह चुनाव बड़ी समझदारी और भविष्य चिन्तन के पश्चात हुआ। चुनाव के पूर्व अपनी शक्तियों को तौल लिया गया। ये उद्देश्य नाना प्रकार के थे। व्यक्तिगत उन्नति के साथ इनमें समाज, राष्ट्र और मानवमात्र की सामूहिक उन्नति का विधान था। कोई कला, विज्ञान, धर्म, राजनीति में महान बना तो कोई मानव-सेवा या भगवत्सेवा में बड़ा बना। किसी ने लोकोपकार के लिए अस्पताल, सेवा-सदन, दानशील संस्थाएँ निर्मित कीं, किसी ने दान किया। किसी ने कला, साहित्य, संगीत, चित्रकारी से उच्चतम स्थिति प्राप्त की।

आप भी अपनी इच्छानुसार अपने जीवन का उद्देश्य अवश्य रखिए, उसका

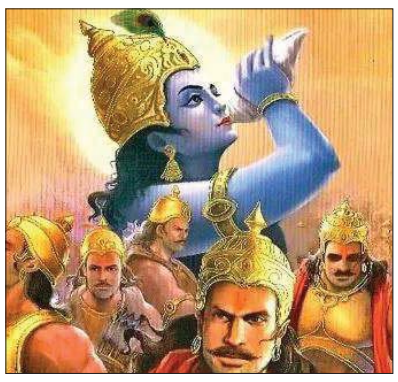

अच्छी तरह अध्ययन कीजिए, उस क्षेत्र के व्यक्तियों से मिलिये, अधिक से अधिक परामर्श कीजिए।

निर्णय शीघ्र करो, स्वयं करो

यदि आप नेता बनना चाहते हैं तो जल्दी ही निर्णय करना चाहिए। ''अमुक काम करूँ अथवा न करूँ'' ऐसे पशोपेश से बचना चाहिए। यदि आप प्रत्येक व्यक्ति का दान या परामर्श स्वीकार करते जायेंगे, तो कभी भी न पहुँच पायेंगे। कोई कुछ कहेगा, तो दूसरा विपरीत सलाह देगा। प्रत्येक व्यक्ति अपनी-अपनी इच्छा, बुद्धि, शक्ति, रूचि और दृष्टिकोण से सलाह देगा। फल यह होगा कि आपकी शक्ति सामर्थ्य से कोई भी मेल न खायेगा। सबके सुझाव पृथक-पृथक होंगे, कोई आपके अनुकूल न बैठेगा। प्रत्येक के निष्कर्ष अलग होते हैं।

आपको व्यक्तिगत अनुभवों के बल पर ही अपना निर्णय करना चाहिए। आप अपने यहाँ के नेताओं का अध्ययन करें तो आपको यह प्रतीत होगा कि उनमें शीघ्र निर्णय करने की अद्भूत क्षमता थी। निर्णय करने में अधिक देरी न होने के कारण उनको बहुत-सा समय मिल गया। दूसरे अंधकार में हाथ-पाँव फैलाये रहे और वे अपने क्षेत्र में उन्नति करते गये।

नेता भविष्य द्रष्टा होते हैं। अर्थात् स्वतंत्र रूप से बहुत आगे की सोचते हैं। शब्दों, विचारों, योजनाओं और अपने संकल्पों में स्वतंत्र होते हैं। वे अपना अलग चिन्तन रखते हैं। दूसरों के अनुभवों से लाभ अवश्य उठाते हैं, पर अपना मार्ग स्वयं निर्धारित करते हैं। आजकल वह युग नहीं कि आदमी को जैसा कहा जाय वह बिना समझे-बूझे वैसा ही करता जाए। आजकल स्वयं चिन्तन और नये रूप में सोचने का युग है। नया युग है, नई परिस्थितियाँ हैं, नई समस्याएँ हैं, नए मापदण्ड हैं। उन सबके लिए हमें नए रूप में ही सोचना-विचारना है। युग के अनुसार अपने आदर्शों को ढ़ालना है, स्वयं ढलना है।

कृतज्ञता और प्रोत्साहन

जिन व्यक्तियों ने आपका सहयोग किया, सेवा की, सलाह दी, प्रेम किया है अथवा मार्गदर्शन दिया है, उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट कीजिए। अपने सफल सहयोगियों को दाद दीजिए, अर्थात् उनकी सेवा भावना का प्रोत्साहन कीजिए। संगीत, कविता, कला, लेखन, अभिनय आदि प्रायः सभी क्षेत्रों के कलाकार (जो हो सकता है आपके सहयोगी भी हों) प्रोत्साहन की आकांक्षा करते हैं। बड़े नेता सदा ऐसे विकासोन्मुख कलाकारों को सच्चा प्रोत्साहन दिया करते हैं।

दृढ़ निश्चयी बनो

पुनः-पुनः अपने निर्णयों या आदर्शों को मत बदलिये। आप जानते हैं कि आप उसी को नेता मान सकते हैं जो पौरूषपूर्ण हो, चट्टान की तरह दृढ़ हो और स्पष्ट निर्देश दे। उसे यह ज्ञान हो कि वह वस्तुतः क्या कर रहा है? क्या करना है? जो कुछ वह कह रहा उसका क्या प्रभाव होगा? आप कभी उस व्यक्ति पर विश्वास न करेंगे जो थोडी-थोड़ी देर में अपने विचारों को बदला करता है या विषम स्थिति को देखकर डर जाता है, जो तनिक से विरोध से भयभीत हो जाता है। नेता प्रायः वे ही होते हैं जिन्होंने अपने मत को खूब सोचा है और फिर उस पर दृढ़ता से डटे रहे हैं।

संत एमर्सन को बौद्धिक ब्राह्मण कहा जाता है। वे अपने संकल्पों पर दृढ़ रहा करते थे। यदि कोई मित्र उनके अनुरूप नैतिकता एवं सत्य के धरातल पर नहीं होता था तो वे उससे कहा करते थे -''जनाब, आप अपने रास्ते जाइये, मैं अपने मार्ग पर जाऊँगा। दम्भ करने से कोई लाभ नहीं। यदि हम अपने मतानुसार सत्य मार्ग का अनुसरण करते रहे, तो कभी न कभी आगे चलकर एक हो जायेंगे।'' वे न तो किसी मित्र की प्रतिध्वनि बनना चाहते थे और न किसी को प्रतिध्वनि बनाना चाहते थे। वे क्षुद्रता का खुलकर बहिष्कार करते थे।

महर्षि एमर्सन के ये शब्द लुई पाश्चर के जीवन के निष्कर्ष हैं, ''जो मनुष्य सुदृढ़ता से धैर्य का आंचल पकड़ लेते हैं, वे फिर जीवन के ऐसे गड्ढे में नहीं गिर सकते कि जहाँ से वे उठ नहीं सकें। मैंने धैर्यवान मनुष्य को प्रायः अपने अभूतपूर्व अभीष्ट पर ही पहुँचते हुए देखा है। वास्तव में मनुष्य में इतना जीवट व साहस होना चाहिए कि वह संकटकालीन अवस्था में अपने आप को खड़ा रख सके।''

सेम्युएल स्माइल्स के शब्द सुकरात की इन बातों को स्पष्ट करते हैं, ''आत्मोद्धार अथवा अपनी उन्नति करने में निर्णय शक्ति, दृढ़ निश्चय और तत्परता की आवश्यकता होती है। इनकी आदत डाल ली जाय और आरम्भ में जिस हद तक हो सके, आत्मविश्वास के साथ अपना काम स्वयं किया जाय। अपने ऊपर विश्वास न होने से हमारी उन्नति में बहुत बाधा आ जाती है।''

युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य (वाङ्मय-21 'अपरिमित संभावनाओं का आगार मानवी मस्तिष्क' पृष्ठ 2.37-40 से संकलित, संपादित)

विजयादशमी से प्रेरणा लें, युग निर्माण के लिए दिग्विजयी शक्ति जगाएँ

जाग्रत् आत्माओं के संगठन, प्रशिक्षण, नियोजन का समर्थ तंत्र बनाएँ

इतिहास की पुनरावृत्ति

विजयादशमी पर्व से संबंधित दो कथाएँ प्रसिद्ध हैं। एक है माता दुर्गा के द्वारा महिषासुर और उसके असुर अनुयायियों का विनाश और दूसरी है भगवान श्री राम द्वारा रावण पोषित आसुरी तंत्र का उच्छेदन। आतंकी आसुरी तंत्र को निरस्त करने के लिए दोनों में ही बिखरी हुई देवशक्तियों को संगठित किया गया। प्रत्यक्ष और परोक्ष दिव्य पुरुषार्थ के समन्वय से असंभव से दिखने वाले कार्य संभव हो सके। अनीति-अनाचार के आतंक को निरस्त करके स्नेह-सौजन्य युक्त स्वर्णिम व्यवस्था पुनः स्थापित करने की ईश्वरीय योजना साकार हुई।

वर्तमान समय में युग परिवर्तन की ईश्वरीय योजना को प्रभावी बनाने के लिए भी इसी ऐतिहासिक प्रक्रिया की समयानुसार पुनरावृत्ति की जानी है। भयानक दुष्प्रवृत्तियों के कारण प्रकृति और मानवता के अस्तित्व पर ही प्रश्नवाचक चिह्न लगा दिए गए हैं। देवी योजना के अनुसार बिखरी हुई जागृत आत्माओं को एकत्रित-संगठित करके उन्हें सत्प्रवृत्ति संवर्धन के मोर्चे पर लगाया जाना है। इस अभियान को इतना सशक्त, व्यापक, समर्थ बनाना है कि सामाजिक व्यवस्था पर हावी हो रही दुष्प्रवृत्तियों को निरस्त किया जा सके और प्रज्ञायुग के अनुरूप सतयुगी वातावरण बनाया जा सके।

ऐसे कार्य परमात्मसत्ता के परोक्ष और प्रत्यक्ष तंत्र के समन्वित पुरुषार्थ से ही सिद्ध होते हैं। किसी फैक्ट्री के सभी यंत्र पावर हाउस से प्रवाहित बिजली से ही चलते हैं। लेकिन यंत्र यदि प्रामाणिक स्तर के न हों तो पर्याप्त बिजली होने पर भी काम चलता नहीं। इसी प्रकार अवतारी सत्ता का समर्थ चेतन प्रवाह भी उपयुक्त प्रामाणिक व्यक्तित्व वाले व्यक्तियों के माध्यम से ही कार्य करता है। इसीलिए हनुमान उपयुक्त माध्यम बनते हैं तो राम अपनी प्रसन्नता एवं कृतज्ञता व्यक्त करते हैं। लक्ष्मण मूर्छित हो जाते हैं तो राम दुःखी हो जाते हैं, हर कीमत चुकाकर उन्हें चैतन्य अवस्था में लाने को आतुर हो जाते हैं। अर्जुन अपने पुरुषार्थ से कतराने लगता है तो कृष्ण नाराजगी व्यक्त करते हैं, उसे पुरुषार्थ के लिए प्रेरित करने में कोई कसर नहीं छोड़ते। दोनों के समन्वित पुरुषार्थ से ही काम बनते हैं। इसीलिए गीताकार ने अंतिम श्लोक में यही भाव व्यक्त किए हैं कि *''जहाँ योगेश्वर कृष्ण और पुरुषार्थी पार्थ का संयोग बनता है, वहीं श्री, विजय, विभूति आदि की सिद्धि होती है।''*

प्रज्ञापुराण (प्रथम खंड) में भगवान विष्णु नारद को यही निर्देश देते हैं-*''मैं परोक्ष स्तर पर प्रेरणा एवं शक्ति का संचार करूँगा और तुम उस संचार को क्रियाशील रूप देने वाले प्रामाणिक माध्यमों को तैयार करो। इसके लिए जागृत आत्माओं को बड़ी संख्या में भेजा गया है। उन्हें उनके जीवनोद्देश्य का स्मरण कराओ। उनमें उत्साह उभरे तो उसे तत्काल किसी उपयुक्त, भले ही सुगम कार्य में लगा दो। इतनी व्यवस्था बन गई तो आगे के कार्य हमारी युगांतरीय चेतना संपन्न करा लेगी।''*

चूँकि कार्य विश्वव्यापी परिवर्तन का है, इसलिए सभी वर्गों और क्षेत्रों की प्रतिभाओं को इसमें लगाना ही पड़ेगा, तभी युगक्रांति की ऐसी आँधी चलेगी जो तमाम विसंगतियों को तहस-नहस कर दे। इसके लिए हर क्षेत्र में जागृत आत्माएँ भेजी गई हैं। उन सब तक प्रेरणा पहुँचाने तथा उत्साहित करके युग परिवर्तन के किसी न किसी कार्य में नियोजित करने का कार्य युग निर्माण के सृजन सैनिकों को करना है।

लक्ष्य के अनुरूप तैयारी

जिस स्तर का कार्य सामने हो, उसी स्तर की तैयारी उसे संपन्न करने के लिए की जाती है। बड़ी योजनाएँ लंबे समय तक चलती हैं। उनके मुख्य लक्ष्य को स्मरण में रखते हुए चरणबद्ध-समयबद्ध सामयिक लक्ष्य निर्धारित किए जाते हैं। हर चरण की सफलता अभियान की सामर्थ्य को बढ़ाती है। बढ़ी हुई सामर्थ्य को अगले चरण के अपेक्षाकृत बड़े लक्ष्यों की पूर्ति में लगाया जाता है।

युग निर्माण का तंत्र इस दिशा में जागरूक है। उक्त प्रक्रिया के अंतर्गत वंदनीया माताजी के जन्मशती वर्ष (2026) तक देश के हर प्रांत के हर जिले, हर ब्लॉक और हर गाँव तक अभियान की दिव्य प्रेरणाएँ पहुँचाने और वहाँ युग निर्माण की जीवंत इकाइयाँ स्थापित करने का लक्ष्य घोषित किया जा चुका है। घोषणा के समय जन्मशती तक 9 वर्ष का समय उपलब्ध था। कहा गया था कि इसे तीन-तीन वर्ष के तीन चरणों में पूरा किया जाए। पहली त्रिवार्षिक अवधि 2019 में पूरी हो जाएगी। गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ अभियान इसी योजना के अंतर्गत चलाया गया, जिसमें सफलता के नए कीर्तिमान बनो और परिजनों में नया मनोबल और उत्साह जागा। इसके लिए सभी अग्रदूत एवं सहयोगी परिजन साधुवाद के पात्र हैं।

जो कार्य हुआ वह सराहनीय है, किंतु जो अभी शेष है, उसकी बड़ी चुनौतियाँ सामने आ गई हैं। बड़े भोजन भंडारे की घोषणा करके उसमें शामिल होने का उत्साह जन-जन में जगाना कठिन नहीं है। लेकिन आमंत्रितों को भोजन कराने, उन्हें संतुष्ट करने के लिए बहुत बड़ी व्यवस्था बनानी पड़ती है। इसी प्रकार नवसृजन अभियान में ईश्वर के साथ भागीदारी के लिए लोगों के मनों में उत्साह जगा देना कठिन नहीं है। लेकिन साझेदारी के लिए उनमें अविचल धैर्य, अदम्य साहस और कुशलता जगाना आसान नहीं है। इसके लिए बड़ी सूझबूझ और कुशलता के साथ निरंतर प्रयास करने पड़ेंगे। जैसे-

• सामूहिक उल्लास के प्रवाह में कौतुकी प्रकृति के व्यक्ति भी बड़ी संख्या में जुड़ जाते हैं। वे अधिक समय टिकते नहीं। उनके बीच से प्राणवानों, जागृत आत्माओं को छांट लेना, उन्हें निरंतर संपर्क में रखकर प्रेरणा और प्रोत्साहन देते हुए सृजन साधना में लगाए रखना बहुत जरूरी होता है। आवश्यकता के अनुसार उनमें कुशलता बढ़ाने के लिए प्रयोगों और प्रशिक्षणों की भी व्यवस्था बनानी पड़ती है। तभी अगले चरण के बड़े लक्ष्यों को सिद्ध करने के लिए पर्याप्त संख्या में पर्याप्त कुशल सृजन सैनिकों की उपलब्धि हो पाती है। सन् 2026 तक के लिए निर्धारित लक्ष्य तक पहुँचने के लिए हमें उपलब्ध सृजन सैनिकों के सुयोजन से नए क्षेत्रों में विस्तार और नए क्षेत्रों से उभरने वाले उत्साहियों को प्रेरणा-प्रशिक्षण देकर अगले चरणों की सिद्धि हेतु नियोजित करते रहने की शृंखला निरंतर गतिमान रखनी होगी। केन्द्र ने इसके लिए चरणबद्ध कार्य योजना बनाई है, जिसे क्षेत्रीय छोटी-बड़ी सभी इकाइयों द्वारा विवेक और उत्साहपूर्वक चलाया जाना है।

क्रमिक चरण

विस्तार: • संपर्क में आए पुराने और नए क्षेत्रों को चिह्नित करें। उनमें संगठन की मूलभूत इकाइयों, प्रज्ञा मंडलों (पुरुष मंडल, महिला मंडल, युवा मंडल या संयुक्त मंडलों) की प्रामाणिक समीक्षा करें। यदि वे निष्क्रिय हैं तो उन्हें सक्रिय किया जाए। उनके सदस्यों की संख्या 1 से 5, 5 से 25, 25 से 125 के क्रम से बढ़ाने की व्यवस्था बनाई जाए। चालीस-पचास से अधिक संख्या हो जाने पर उन्हें क्षेत्रों के हिसाब से दो स्वतंत्र मंडलों में बाँट दिया जाए। इस प्रकार विकसित होने वाले नए मंडलों में नए उत्साही और पुराने अनुभवी दोनों प्रकार के सदस्य शामिल रहेंगे। इससे उनको जीवंत बनाये रखने में सुविधा रहेगी।

नये क्षेत्रों में बने मण्डलों को प्रेरित-प्रोत्साहित करते रहने की जिम्मेदारी निकटस्थ अनुभवी परिजनों को सौंपी जाय। उन्हें प्रेम और प्रेरणा देते रहकर उनका उत्साह बढ़ाते रहने से नये मण्डलों का समुचित विकास होता रहेगा।

संगठन : • युगऋषि ने स्पष्ट किया है कि यह मण्डल ही व्यक्ति निर्माण एवं संगठन की मूलभूत इकाइयों के रूप में विकसित होते रहने चाहिए। हर सदस्य ईश-उपासना, जीवन साधना और लोक आराधना की साधनाएँ नित्य करें। सप्ताह में एक बार सामूहिक साधना, स्वाध्याय करें, संयम एवं सेवा के सामूहिक प्रयोग करें। इससे परस्पर आत्मीयता और कुशलता बढ़ाते रहने का लाभ सहज ही मिलता है।

• हर सदस्य को प्रतिदिन कम से कम एक घंटा समय लोकमंगल के कार्यों में लगाने के लिए प्रेरणा एवं सहयोग देने का क्रम भी बनाया जाय। परिस्थितियों के अनुसार सप्ताह में कम से कम सात घंटे और माह में तीस घंटे के समयदान की व्यवस्था भी बनाई जा सकती है।

• हर समयदानी सदस्य से सृजन कार्यों के निमित्त उनकी रुचि और क्षमता भी पूछी जाय। किसी को साहित्य विस्तार, किसी को यज्ञ-संस्कार, किसी को प्रचार-प्रवचन, किसी को किन्हीं रचनात्मक कार्यों, सुधारात्मक आन्दोलनों में सहज रुचि होती है। प्रारम्भ में अपनी सहज रुचि के कार्यों में व्यक्ति प्रसन्नता से लग जाता है। बाद में आवश्यकता के अनुसार अन्य कार्यों में भी मन लगने लगता है। पहले क्षमता के अनुसार कार्य दिये जावें तो बाद में कार्य के अनुरूप क्षमता के विकास में भी रस आने लगता है।

प्रशिक्षण : • कार्य के अनुरूप क्षमता के विकास के लिए प्रशिक्षण की जरूरत पड़ती है। इसलिए पुराने अनुभवी व्यक्तियों को प्रशिक्षण देते रहने की जिम्मेदारी भी निभाने को तैयार रहना चाहिए। समयदानी साधकों की रुचि का लेखा-जोखा होने से उन्हें प्रारम्भ में उन्हीं कार्यों (कर्मकाण्ड, संगीत, साधना, प्रवचन, रचनात्मक कार्यों) में प्रशिक्षण देना सम्भव हो पाता है। किसी एक विषय में सक्रिय हो जाने से मनोबल बढ़ता है। इस अनुभव के बाद अन्य विषयों में भी उत्साह बढ़ता है।

• प्रशिक्षण भी कई स्तर के हो सकते हैं। थोड़ा-थोड़ा समय देने वाले के लिए प्रतिदिन या सप्ताह में 3 दिन, एक-दो घंटे के प्रशिक्षण सहजता से चलाये जा सकते हैं। किसी छुट्टी के दिन 8 घंटे के प्रशिक्षण की व्यवस्था भी स्थानीय स्तर पर बनाई जा सकती है। हर प्रशिक्षण में विषयों में कुशलता बढ़ाने के साथ ही उन्हें संगठन की रीतिनीति के आवश्यक सूत्र भी सिखाते रहना चाहिए। इससे उनके लिए अनुशासित ढंग से आगे बढ़ने का मार्ग प्रशस्त होता है।

• अधिक समय एक साथ दे सकने वाले समयदानियों से भी उनकी रुचि और क्षमता जान लेनी चाहिए। इससे उन्हें तत्काल काम सौंपना अथवा उनकी योग्यता विकास के क्रम को आगे बढ़ाते रहना सहज हो जाता है। उनके प्रशिक्षण भी विषयवार चलाते रहने से वे जल्दी तैयार होते हैं। सुविधा के अनुसार उनके लिए कई दिनों के आवासीय प्रशिक्षण भी चलाये जा सकते हैं। इसके लिए ब्लॉक, जिला या उपजोन स्तर के संगठनों से वाञ्छित सहयोग भी प्राप्त किए जा सकते हैं। ध्यान रहे कि प्रभावित व्यक्तियों को संगठित और प्रशिक्षित करने से ही सृजन सैनिकों की संख्या और गुणवत्ता को निरंतर बढ़ाते रहना संभव होगा। इसी विकास प्रक्रिया के आधार पर निर्धारित लक्ष्यों को निर्धारित अवधि में प्राप्त करते रहा जा सकता है।

नियोजन : प्रशिक्षण पाये हुए व्यक्तियों को तत्काल कोई ऐसी जिम्मेदारी सौंपी जाये, जिसमें उन्हें प्रशिक्षण से प्राप्त अपनी योग्यता को इस्तेमाल करना पड़े। यदि तत्काल अभ्यास न मिले तो प्राप्त प्रशिक्षण क्रमशः भूलने लगता है। प्रशिक्षण देने या पाने की उपयोगिता घट जाती है। इसके लिए समर्थ समयदानियों का तंत्र भी विकसित करना चाहिए।

समर्थ समयदानी दो तरह के हो सकते हैं। एक वे जो किसी कार्य में नियमित समयदान करते आ रहे हैं तथा अपने अनुभव के आधार पर कुछ (दो-चार से आठ-दस तक) समयदानियों को नियोजित कर सकते हैं। देखा गया है कि भावनापूर्वक समयदान का संकल्प देने वाले अधिकांश साधक समयदान करना चाहते हैं। लेकिन कब क्या करें, यह निर्धारण नहीं कर पाते। कुछ विचार उभरे भी तो संकोच के कारण शुरू ही नहीं कर पाते। यदि उन्हें छोटे-छोटे कार्य सौंपे जायें, कुशल व्यक्तियों के साथ सहयोगी बनने का मौका मिले तो वे सक्रिय हो जाते हैं। अपने संकल्प की पूर्ति का संतोष और कार्य से प्राप्त अनुभव उन्हें निरंतर प्रगति की प्रेरणा देते हैं।

दूसरे समर्थ समयदानी वे कहे जा सकते हैं जो स्वयं तो अधिक समय नहीं दे पाते लेकिन अपने प्रभाव और कौशल से समयदानियों के मार्ग में आने वाली समस्याओं के समाधान निकालते रह सकते हैं। उनके संरक्षण और मार्गदर्शन से समयदानियों का हौसला निरन्तर बढ़ता रहता है। इस प्रकार समयदानियों के संगठन, प्रशिक्षण और सुनियोजन की व्यवस्था बन जाये तो कुशल समयदानियों की संख्या और गुणवत्ता बढ़ाते रहने का अविरल क्रम चल पड़ना कठिन नहीं है। निर्धारित अवधि में निर्धारित लक्ष्य हासिल करने योग्य समर्थ्य सृजन सेना विकसित करते रहने में सफलता मिल सकती है। देव संस्कृति दिग्विजय के लिए ऋषिसत्ता द्वारा निर्धारित चरण शानदार ढंग से पूरे किए जा सकते हैं।

लक्ष्यबद्ध चिन्तन

प्रस्तुत कार्ययोजना के सूत्र सरसरी दृष्टि से देखने में भले ही सामान्य लगें, किन्तु युगऋषि द्वारा दिए गये लक्ष्यबद्ध चिन्तन से जुड़ते ही उनकी गहराई, अनूठी सृजन सामर्थ्य का बोध होने लगता है। इसे लौकिक यश देने वाला कार्य न मानकर प्रभु के उच्चस्तरीय अनुग्रहों का सत्पात्र बनाने वाली श्रेष्ठ साधना मानकर किया जाय। शक्ति प्रदर्शन वाले आयोजनों की अपेक्षा सृजनशक्ति संवर्धन की उक्त साधना को अधिक महत्त्व दिया जाय। स्पष्ट है कि सही दिशा में किए जाने वाले नैष्ठिक प्रयासों के साथ प्रभु अनुग्रह जुड़ते ही कठिन से कठिन लक्ष्य भी हस्तगत हो ही जाते हैं।

शांतिकुंज की प्रसारण सेवाएँ
Facebook: GayatriPariwaar Twitter: @AWGPharidwar Blog: awgpskj.blogspot.com
Email: awgpemaillist@gmail.com Whattsapp : व्हॉट्सएप 8439014110 पर अपना नाम मैसेज कीजिए
YouTube shantikunjvideo_Gayatri Pariwar

प्रखर हुआ जनजागरण अभियान, घर-घर पहुँचे गायत्री माता-यज्ञ भगवान

छोटे-से नगर के 1008 घरों में हुआ एक क्रान्तिकारी प्रयोग

कालापीपल, शाजापुर। मध्य प्रदेश

गृहे-गृहे गायत्री उपासना अभियान को गति देते हुए भारतवर्ष का पहला ऐतिहासिक आयोजन मध्य प्रदेश शाजापुर जिले के मात्र 2500 घरों की बस्ती वाले एक छोटे से नगर कालापीपल में 1 सितंबर-रविवार को 1008 घरों में एक साथ एक ही समय में गायत्री यज्ञ संपन्न हुए। यह महान आध्यात्मिक प्रयोग उज्जैन, रतलाम, नीमच, इंदौर, देवास, सीहोर, शाजापुर, आगर मालवा, राजगढ़, भोपाल जिलों से आए युग पुरोहितों के सामूहिक पुरुषार्थ से सम्पन्न हुआ। जिन नये घरों में यज्ञ हुआ वहाँ देवस्थापना कर प्रत्येक व्यक्ति को देवदक्षिणा स्वरूप एक बुराई छोड़ने, नियमित गायत्री उपासना करने व एक वृक्ष लगाने का संकल्प दिलाया गया।

यज्ञ के बाद युग पुरोहितों द्वारा पूरे नगर में एक विशाल जनजागरण रैली व वृक्ष कावड़ यात्रा निकाली गई। यह गायत्री प्रज्ञापीठ कालापीपल से आरंभ हुई। पूरा नगर एक अलौकिक आध्यात्मिक ऊर्जा से ओतप्रोत हो गया। पूरे नगर में यज्ञधूम्र की विशेष गंध और मंत्रध्वनि लोगों में भक्तिभावना का संचार करती रही। निःसंदेह यह दिन नगर के इतिहास में अविस्मरणीय रहेगा।

यज्ञोपरांत पुरोहितों द्वारा निकाली गई जनजागरण यात्रा

कालापीपल में हुआ यह विशिष्ट प्रयोग संगठित प्रयासों की एक शानदार परिणति थी। घर-घर जाकर यज्ञ के लिए पंजीयन का क्रम लगभग एक माह पहले से ही आरंभ हो गया। ऐसे सामूहिक प्रयोग नि :संदेह मिशन को क्रान्तिकारी गति प्रदान कर सकते हैं।

धमतरी और गरियाबंद में स्थापित हुए कीर्तिमान

क्रमशः 7149 और 5000 घरों में यज्ञ हुए

धमतरी। छत्तीसगढ़

गायत्री शक्तिपीठ धमतरी पर उपजोन स्तरीय गोष्ठी आयोजित हुई। इसमें उपजोन के अंतर्गत आने वाले धमतरी, रायपुर, गरियाबंद, महासमुंद, बलौदाबाजार जिलों के समन्वयक, जोन व उपजोन के वरिष्ठ प्रतिनिधि शामिल हुए। पिछले 3 माह में इन जिलों में हुए गृहे-गृहे यज्ञ अभियान, पौधारोपण, बाल संस्कार शाला, भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा, समूह साधना, स्वच्छता अभियान आदि कार्यों की समीक्षा की गई।

गृहे-गृहे यज्ञ-उपासना अभियान के अन्तर्गत धमतरी और गरियाबंद जिले के प्रयासों को विशेष रूप से सराहा गया। इन दोनों जिलों में अब तक क्रमशः 7149 और 5000 घरों में गायत्री यज्ञ सम्पन्न कराये गये हैं। कार्यक्रम में 7 बाल आचार्यों का भी विशेष सम्मान किया गया, जिन्होंने गृहे-गृहे यज्ञ अभियान में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया और विशेष प्रशंसा पाई।

समीक्षा गोष्ठी में भावी सक्रियता की भी चर्चा हुई। जिन गाँवों में गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ अभियान चलाया गया है, वहाँ आगामी वर्ष में 5 कुंडीय गायत्री महायज्ञ करने की योजना सुनिश्चित हुई। इनमें विचार क्रान्ति, संस्कार एवं रचनात्मक आन्दोलनों को गति देने की रूपरेखा भी बनाई गई। समीक्षा बैठक में सीपी साहू,आरएस मिश्रा, सूरज लांबा, टीकम साहू, डीआर यादव, बोधराम साहू, दिलीप नाग, ललित मेश्राम, पद्मिनी साहू, आदि उपस्थित थे।

सामूहिक यज्ञों की श्रृंखला के लिए गाँव-गाँव, नगर-नगर निरंतर बढ़ रहा है उत्साह

खरगोन जिले में कसरावद तहसील के ग्राम उटावद में 25 घरों में एवं बालसमुंद में 40 घरो में यज्ञ कराए गए। 8 सितम्बर को खरगोन जिले के ही वनवासी ग्राम ढाबला में 5, बिस्टान में11 घर व देव ग्राम घोटया में 55 घरों में गायत्री यज्ञ हुए। इन गाँवों में प्रातःकाल पर्यावरण व व्यसन मुक्ति रैली निकाली गई। प्रत्येक किसान भाइयों को जल संरक्षण-संवर्धन की प्रेरणा दी गई। कुरीतियों को समाप्त कर प्रगतिशील परम्पराएँ अपनाने की ओर भी ध्यानाकर्षित किया गया।

यज्ञोपवीत-दीक्षा संस्कार

खरगोन जिले की सनावद तहसील के ग्राम बांगरदा में 8 सितंबर को गायत्री यज्ञ का विशाल कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर 30 युवाओं ने यज्ञोपवीत संस्कार एवं 60 भाई-बहिनों ने गुरुदीक्षा संस्कार सम्पन्न कराए। सभी ने व्यसनमुक्त जीवन जीने के संकल्प लिए।

आगर मालवा में 15 परिवारों में यज्ञ सम्पन हुआ। हर घर को गायत्री उपासना के साथ नशा त्यागने एवं वृक्ष लगाने की प्रेरणा दी गई।

सिहोर जिले के ग्राम भीलखेड़ी इछावर में 24 घरों में गायत्री यज्ञ कराया गया।

सतना में यज्ञ अभियान के लिए शक्तिपीठ से पुरोहितों की विदाई

अलीराजपुर जिले के सोण्डवा, भाबरा, कट्ठीवाडा, जोबट व अलीराजपुर तहसीलों में 8 सितम्बर को 82 घरों में गायत्री यज्ञ एवं देवस्थापना के कार्यक्रम सम्पन्न हुए।

सतना। मध्य प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ सतना के यज्ञाचार्यों की टोली ने 'गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ' अभियान के अंतर्गत मास्टर प्लान कालोनी के 28 घरों में एक ही समय पर विधिवत यज्ञ संपन्न कराया गया। आयोजन से पूर्व श्री विश्वनाथ सोनी ने लोगों को लोकमंगल के लिए समर्पित इस सामूहिक आध्यात्मिक प्रयोग में भाग लेकर पुण्य लाभ प्राप्त करने की प्रेरणा दी।

मुखत्यारगंज में भी ऐसा ही प्रयोग हुआ। वहाँ के कार्यकर्त्ताओं ने 24 घरों में एक साथ-एक समय में यज्ञ संपन्न कराया। यज्ञ के साथ सभी परिजनों को स्वाध्याय, संयम, सेवा का व्रत दिलाया गया और कुरीतियों से बचने-बचाने की प्रेरणा भी दी गई।

रांची। झारखण्ड

श्री गणेश भगत एवं साथियों ने 11 अगस्त को तैमारा, दशम फॉल एवं धमारा गाँव के 12 घरों में गायत्री यज्ञ सम्पन्न कराये। इनके अलावा कई घरों में दीपयज्ञ कराए गए। सभी कार्यक्रमों में मांसाहार का त्याग कर, नियमित उपासना, बलिवैश्व, मंत्रलेखन जैसे कार्य नित्य करते हुए अपने जीवन को ऊँचा उठाने की प्रेरणा दी गई। उन्हें मिशन की मासिक पत्रिकाओं का सदस्य भी बनाया गया। इन कार्यक्रमों में मानवमात्र के उज्ज्वल भविष्य की सामूहिक प्रार्थनाएँ भी की गईं। सर्वश्री शिवेन्द्र पाठक, बासुकीनाथ पाठक दूर्गा साहू, उत्तम दास आदि भाइयों-बहिनों ने यज्ञ पुरोहित की भूमिका निभाई।

ग्राम बांगरदा में यज्ञोपवीत एवं दीक्षा संस्कार कराते ग्रामवासी

जिले की अनेक शाखाओं ने अभियान को गति दी

छिंदवाड़ा। मध्य प्रदेश

गृहे-गृहे यज्ञ योजना के अन्तर्गत गायत्री शक्तिपीठ छिंदवाड़ा द्वारा कृष्णा नगर में 51 घरों में गायत्री यज्ञ कराए गए। यज्ञ से पूर्व इस क्षेत्र में जन जागरण रैली निकाली गई। इसके माध्यम से वृक्ष गंगा कावड़ यात्रा ,आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी आदि आन्दोलनों का प्रचार किया गया।

यज्ञ अभियान प्रभारी अरुण पराड़कर ने बताया कि 11 अगस्त को जिले की सभी शाखाओं ने घर-घर यज्ञ अभियान चलाते हुए जिले के हजारों घरों में गायत्री यज्ञ सम्पन्न कराए। इनके माध्यम से लोगों को व्यक्तिगत, पारिवारिक एवं सामाजिक कष्ट-कठिनाइयों से उबरने के लिए गायत्री एवं यज्ञ को नियमित जीवन में अपनाने की प्रेरणा दी गई, संकल्प दिलाए गये, व्यसन छोड़ने की देवदक्षिणा भी दिलाई गई।

छिंदवाड़ा जिले में युगचेतना विस्तार की दृष्टि से 11 अगस्त का दिन अत्यंत महत्त्वपूर्ण था। अंत में सर्वश्री भगवान दास साहू,रमेश श्रीवत्री,विनोद मर्सकोल्हे, राजेश ग्यारसिया, बसन्त बलवंशी, विनोद महोरे, सुश्री कमला डेहरिया, श्रीमती अनीता राउत एवं अभियान के समस्त सहयोगियों के प्रति आभार व्यक्त किया गया।

प्रज्ञा पुराण कथा के प्रभाव से युगशक्ति गायत्री के प्रति बढ़ती आस्था

नारंगी, गुवाहाटी। असम

पूर्वोत्तर भारत में नया प्रकाश फैलाने के लिए प्रयत्नशील गुवाहाटी शाखा द्वारा 4 से 7 अगस्त की तारीखों में 11 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ एवं श्रीमद् प्रज्ञा पुराण कथा का कार्यक्रम आयोजित किया गया। भव्य कलश यात्रा के साथ आरंभ हुए इस कार्यक्रम ने स्थानीय जनमानस पर गहरी छाप छोड़ी। लोगों को उनकी दैनिक जीवन की समस्याओं के समाधान दिये।

शक्तिपीठ गुवाहाटी के परिव्राजक श्री क्षीरोदेश प्रसाद ने देवर्षि नारद एवं भगवान विष्णु के संवाद के रूप में वर्तमान समस्या और परम पूज्य गुरुदेव द्वारा प्रस्तुत उनके समाधानों को प्रेरक-रोचक दृष्टांतों के साथ प्रस्तुत किया। चारों दिन क्रमशः परपीड़ा निवारण, मानव जीवन की गरिमा, परिवार व्यवस्था, युगावतार-प्रज्ञावतार पर चर्चा हुई। उन्होंने कहा कि जो व्यक्ति यज्ञ पिता-गायत्री माता की शरण में आ जाता है, उसकी दुर्बुद्धि का नाश होकर उसके समस्त दुःखों का समाधान स्वतः होता जाता है।

नारंगी के आयोजन में उमड़ा जन सैलाब

प्रतिदिन सैकड़ों श्रद्धालुओं ने यज्ञ-कथा में भाग लिया। पुंसवन, विद्यारंभ, नामकरण आदि संस्कार भी हुए। सैकड़ों लोगों ने गायत्री मंत्र की दीक्षा भी ली।

तीन वर्षीय दैनिक यज्ञ अभियान की पूर्णाहुति

कोटा । राजस्थान

कुन्हाड़ी निवासी समर्पित कार्यकर्त्ता श्री रामरतन नरवर ने 29 सितंबर 2016 को 1008 दिनों तक दैनिक यज्ञ करने का संकल्प लिया था, जो 16 जुलाई 2019(गुरुपूर्णिमा) को गुरुकृपा से निर्विघ्न संपन्न हुआ। इस प्रयोग के सत्परिणामों से उत्साहित होकर श्री नरवर जी ने दैनिक यज्ञ अभियान को **जन्मशताब्दी वर्ष-2026 तक जारी रखने व रचनात्मक कार्यों को गति देने का संकल्प लिया** परम वंदनीया माताजी के जन्मशताब्दी वर्ष-2026 तक जारी रखने का पुनः संकल्प लिया है। उन्होंने यज्ञ से उपार्जित ऊर्जा को रचनात्मक कार्यों में लगाते हुए विचार क्रान्ति, गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ-उपासना, देवस्थापना, मंत्र लेखन, वृक्षारोपण जैसे आन्दोलनों को गति देने में अपनी सक्रियता बढ़ाने का भी निश्चय किया है।

दिवंगत देवात्माओं को भावभरी श्रद्धांजलि

श्री विजय कुमार भास्कर, लांजी, बालाघाट। म.प्र.

मिशन से जुड़ने के बाद पूरी तरह से विचार क्रान्ति अभियान के लिए समर्पित रहे प्राणवान कार्यकर्त्ता श्री विजय कुमार भास्कर का 28 अगस्त 2019 को देहावसान हो गया। उन्होंने 15 वर्षों तक जीवनदानी कार्यकर्त्ता के रूप में शान्तिकुञ्ज को भी अपनी सेवाएँ प्रदान कीं। वे जवीनपर्यन्त अपने क्षेत्र में यज्ञ, संस्कार, बाल संस्कारशाला, साहित्य विस्तार आदि कार्यक्रमों को पूरे मनोयोग के साथ प्रोत्साहित करते रहे।

श्री राजेश्वर सिंह, हजारीबाग। झारखंड

गायत्री शक्तिपीठ के सक्रिय कार्यकर्त्ता

श्री राजेश्वर सिंह (मुखिया जी) का 28 अगस्त को 84 वर्ष की उम्र में देहावसान हो गया। स्व. राजेश्वर जी ने1982 में पूज्य गुरुदेव से दीक्षा ली, उसके बाद पूरा जीवन व्यसन मुक्ति आन्दोलन के लिए समर्पित कर दिया था। 1995 में सीसीएल से सेवानिवृत्त के बाद गायत्री शक्तिपीठ हजारीबाग को सेवाएँ देते रहे। उन्होंने अपने नगर को व्यसनमुक्त करने के साथ नारी जागरण के लिए भी भरपूर कार्य किया।

कुतुबनुमा (कम्पास) की सुई हमेशा उत्तर की ओर रहती है। इससे समुद्री जहाज भटकते नहीं हैं। उसी प्रकार जिसका ध्यान सदैव ईश्वर की तरफ है, वह संसार रूपी समुद्र में भटक नहीं सकता।

विचार क्रान्ति के विशिष्ट प्रयोग

दुर्ग रेलवे स्टेशन पर लगाए गए सद्वाक्य

दुर्ग। छत्तीसगढ़

भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा समिति दुर्ग द्वारा दुर्ग रेलवे स्टेशन के अधिकारियों को 2 X 3 फीट के मिशन के 60-70 सद्वाक्य सौंपे गए हैं। श्री अभय लाल धुर्वे के अनुसार स्टेशन प्रबंधक श्री एस. मोहियुद्दीन के सहयोग से उन्हें पूरे स्टेशन परिसर में लगाया जा रहा है। श्री धीरज टाँक के अनुसार शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री एल.पी. साहू एवं स्थानीय वरिष्ठ कार्यकर्त्ता

अभियंता श्री शिरीष टिल्लू द्वारा दो वर्ष पूर्व भी सद्वाक्य के फ्लैक्स लगवाए गए थे, जिन्हें अब बदला जा रहा है। इस कार्य में वरिष्ठ कार्यकर्त्ता श्रीमती विनीता तिवारी, दिनेश तिवारी, ठाकुर जोहन सिंह, हिंछाराम साहू, आर.एस. देशमुख का विशिष्ट योगदान है।

नगर में घूम रहे हैं सद्वाक्य के फ्लैक्स लगे वाहन

लगभग 2000 रिक्शा, टेम्पो पर लगाए गए हैं सद्वाक्य

रांची। झारखण्ड

पूज्य गुरुदेव के क्रान्तिकारी विचारों से जनमानस को प्रभावित करने के लिए रांची शाखा ने एक शानदार पहल की है। उन्होंने शहर के लगभग सभी तीन पहिया वाहनों के पीछे में सद्वाक्य के फ्लेक्स व स्टीकर लगावाये हैं।

पहले प्रयास में रांची के सक्रिय भाई-बहिनों द्वारा 1500 रिक्शा, 500 टेम्पो, एवं 100 ई-रिक्शा के पीछे लगाए गये। ये वाहन जहाँ से भी गुजरते हैं, दर्शकों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर ही लेते हैं। लोग इन्हें सराहते भी देखे जाते हैं। रिक्शेवालों के प्रति सवारियों की सद्भावना भी बढ़ती है।

रिक्शों पर लगाए गए हैं सद्वाक्य के फ्लैक्स

समग्र योजना का खर्च गायत्री परिवार के कार्यकर्त्ता भाई-बहिन ही मिलकर उठा रहे हैं। उनमें इस आन्दोलन को गति देने का बहुत उत्साह है।

साहित्य एवं वृक्ष कांवड यात्रा निकाली

अम्बेडकर नगर। उत्तर प्रदेश

समाज में प्रचलित गंगाजल काँवड़ यात्रा की तरह ही अम्बेडकर नगर के गायत्री परिवार के कार्यकर्ताओं ने वृक्ष काँवड़ और साहित्य कांवड यात्रा निकाली। परिजनों ने कंधों पर काँवड़ रखकर उसमें वृक्ष तथा युगऋषि का सत्साहित्य प्रतिष्ठित किया। काँवड़ यात्रा निकालते हुए नगरवासियों को पर्यावरण रक्षा और ज्ञानगंगा में डुबकी लगाकर समाज का उद्धार करने का संदेश दिया।

यह काँवड़ यात्रा जिला कलेक्ट्रेट से आरंभ हुई। नगर के अनेक मार्गों से गुजरते हुए हजारों लोगों को काँवड़ यात्रा की परम्परा का प्रगतिशील संदेश देने में सफल रही। अनेक लोगों ने वृक्षारोपण के संकल्प लिये।

काँवड़ यात्रा का शुभारंभ करते अधिकारी

काँवड़ यात्रा के माध्यम से दिया गया संदेश

काँवड़ यात्रा के समय जगह-जगह संदेश दिया गया कि दुर्बुद्धिग्रस्त समाज की मूढ़ परम्पराओं के कारण ही वर्तमान समय की अनेक समस्याओं का जन्म हुआ है। जिन भगवान शिव को प्रसन्न करने की आज आवश्यकता अनुभव की जा रही है, वह सद्ज्ञान की साधना से ही संभव है। वृक्ष प्रत्यक्ष शिव हैं। वृक्ष नहीं रहे तो यह सृष्टि भी नहीं रहेगी।

संघशक्ति की प्रतीक लाल मशाल का लोकार्पण

जावद, नीमच। मध्य प्रदेश

जावद नगर की गायत्री परिवार शाखा ने स्थानीय मुक्तिधाम परिसर में एकता एवं संघशक्ति के प्रतीक 'लाल मशाल' स्तंभ की स्थापना की गई है। इसका लोकार्पण समारोह भारत विकास परिषद के प्रांतीय महासचिव श्री प्रदीप जी चोपडा द्वारा गायत्री परिवार के कार्यकर्त्ताओं, विविध सामाजिक एवं धार्मिक संस्थाओं के प्रतिनिधियों की उपस्थिति में हुआ। कार्यक्रम से पूर्व गायत्री मंदिर खोर दरवाजा से तुलसी यात्रा प्रारंभ कर नगर के प्रमुख मार्गों से होते हुए रामपुरा दरवाजा स्थित मुक्तिधाम पहुंची। इस अवसर पर पौधों को रोपित करने के लिए रियायती दर पर ट्रीगार्ड भी दिए गये।

जावद में विचार क्रान्ति के उत्साह की झाँकी

सेवक की कसौटी

"इन अज्ञानी लोगों की क्या सेवा करें? इनको सुधारना असंभव है।" ऐसा मत सोचो। देखो यह कि कीचड़ में यह कैसा सुन्दर कमल खिला है! तुम भी अज्ञान-कीच में कमल के समान खिलकर कीचड़ में भी सुरभि पैदा करो, सच्चे सेवक की यही कसौटी है। - **स्वामी विवेकानन्द**

24 लाख लोगों तक पहुँचाएँगे प्रज्ञा अभियान

अखिल विश्व गायत्री परिवार प्रयागराज (ज्ञानयज्ञ) शाखा की एक समग्र योजना

... समाचार पृष्ठ 1 से आगे

- योजना के सूत्रधार श्री देवव्रत साहा राय के अनुसार यह देश के कोने-कोने तक और विदेशों तक मिशन का विस्तार करने की, अपरिचित लोगों को अपने मिशन का परिचय देकर उन तक परम पूज्य गुरुदेव के विचारों को पहुँचाने की योजना है।
- प्रज्ञा अभियान के साथ-साथ पुरानी अखण्ड ज्योति, युग निर्माण योजना की पुरानी प्रतियाँ और छोटी पॉकेट बुक्स भी निःशुल्क बाँटी जायेंगी।
- लोगों को विभिन्न पत्रिकाओं का सदस्य बनने के लिए प्रेरित किया जाएगा।

अखण्ड ज्योति संस्थान से श्रद्धेय श्री मृज्युंजय शर्मा जी एवं आदरणीय श्री ईश्वर शरण पाण्डेय जी का इस ज्ञानयज्ञ को गति देने में विशेष सहयोग मिल रहा है। उनके सहयोग से 30 या उससे ज्यादा अखण्ड ज्योति पत्रिका मँगाने वाले देश के 5000 परिजनों तक प्रज्ञा अभियान सहित मिशन की विभिन्न पत्रिकाओं की सदस्य-पाठक बढ़ाने का विशेष अनुरोध पत्र प्रयागराज शाखा के माध्यम से भेजा जा रहा है।

प्रयागराज के सार्वजनिक स्थानों पर साहित्य वितरण करने वाले ज्ञानयज्ञ के होता

सर्वश्री अवधेश सिंह, सरयू प्रसाद विश्वकर्मा, बालकृष्ण प्रसाद गुप्ता, हरेराम सिंह, सुशील कुमार श्रीवास्तव, जगतपाल गुप्ता, दिनेश कुमार यादव, जगदीश चंद्र जोशी, देश दीपक जोशी, विश्व मोहन जोशी, लोकेश चंद्र द्विवेदी, राकेश कुमार सिंह, उमेश चंद्र मिश्रा, तुलसीराम कुशवाहा, मुद्रिका प्रसाद, संजय कुमार गुप्ता, राहुल गुप्ता, राजेन्द्रमणि त्रिपाठी, विनोद कुमार ओझा, ओमप्रकाश तिवारी, यशवंत कुमार शर्मा, प्रेमचंद्र सिंह, शेषनाथ श्रीवास्तव, सुनील कुमार श्रीवास्तव, भगवान जी शर्मा, डॉ. एस.पी. सिंह, विजय शंकर मिश्र, कृपाशंकर श्रीवास्तव, दिनेश कुमार, महेश प्रसाद, विकास यादव, सुशील कुमार श्रीवास्तव (गोविंदपुर), सूबेदार पाण्डेय, हरिओम अग्रवाल, कामता सिंह, श्रीमती जानकी सिंह, पूर्णिमा कुमारी, कुसुम सिंह,

रेलवे स्टेशन पर साहित्य बाँटने निकली प्रयागराज की टोली

सरिता गुप्ता, रोशनी श्रीवास्तव, सरिता अग्रवाल, घनश्याम सिंह, सर्वानंद मिश्रा, रूपनारायण चौहान, मानसिंह, उमेश चंद्र गुप्ता।

दक्षिण पूर्व रेलवे के अधीनस्थ रेलवे स्टेशनों पर लगाए जा सकते हैं मिशन के सद्वाक्य

दक्षिण पूर्व रेलवे के उप महाप्रबंधक (राजभाषा), कार्यालय, महाप्रबंधक (राजभाषा), गार्डनरीच, कोलकाता-43 ने दिनांक 15 जुलाई 2019 को आदेशित पत्रांक सं.का/हिन्दी/20/2/7/3/नियम 11(3) के माध्यम से दक्षिण पूर्व रेलवे के आद्रा, खड़कपुर, चक्रधरपुर एवं रांची मण्डलों के रेल प्रबंधकों को गायत्री परिवार द्वारा सुझाये गये सद्वाक्यों के फ्लैक्स/बैनर रेलवे स्टेशनों पर लगाने के लिए आदेशित कर दिया है। इस आदेश के अनुसार इन मण्डलों के अधीनस्थ रेल प्रतिष्ठानों, रेलवे स्टेशनों, प्रतीक्षालयों और विश्रामालयों में अपने मिशन के चयनित सद्वाक्य लगाये जा सकेंगे।

अधिक जानकारी और आदेश पत्र की प्रतिलिपि शक्तिपीठ धुर्वा राँची या पूर्वी जोन, शान्तिकुञ्ज से प्राप्त की जा सकती है

सद्वाक्य लगाने से पूर्व स्टेशन प्रबंधक अथवा स्टेशन इंचार्ज से स्थान एवं सद्वाक्यों के चुनाव पर सहमति लेनी होगी। ये सद्वाक्य गायत्री परिवार की ओर से निःशुल्क लगाये जायेंगे।

विद्यालयों में पुस्तक मेले

करनाल। हरियाणा

गायत्री परिवार करनाल द्वारा नगर के चार विद्यालयों में पुस्तक मेले लगाए गए। इनके आयोजन में शिक्षक-प्राचार्यों को भी आयोजकों जैसे उत्साह के साथ देखना आह्लादकारी था। सभी प्रधानाचार्यों ने इन्हें सराहते हुए कहा कि युगऋषि की पुस्तकें निःसंदेह विद्यार्थियों के जीवन को सुगढ़ बनाने में एक शिक्षक की भूमिका निभाने वाली हैं।

ये पुस्तक मेले शहीद उधमसिंह व. मा. विद्यालय इन्द्री खण्ड, करनाल में, गीता निकेतन पब्लिक स्कूल चौरा (धरौण्डा खण्ड) में, ज्ञान भारती व. मा. विद्यालय अरडाना (असन्ध खण्ड) में और रामचरित मानस सी.से. स्कूल करनाल में आयोजित किए गए थे।

पुरस्कार वितरण समारोह

मुज़फ़्फ़रनगर। उत्तर प्रदेश

जिले का भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा पुरस्कार वितरण समारोह 11 अगस्त को नौ कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के साथ समन्न हुआ। शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री सुनील शर्मा, जिला विद्यालय निरीक्षक श्री गजेन्द्र कुमार तथा एडवोकेट होतीलाल जी एवं श्री ओंकारदत्त शर्मा ने प्रत्येक वर्ग में वरीयता प्राप्त तीन विद्यार्थियों को सम्मानित किया।

जिला संयोजक श्रीमती रुक्मिणी भारद्वाज ने बताया कि उनके जिले के 100 विद्यालयों में परीक्षा का आयोजन किया गया, 15,000 से अधिक बच्चों ने भाग लिया। डॉ. रामनिवास शर्मा, श्रीमती सोहनवीरी देवी, मा. सोमपाल, एन.एस. त्यागी, देवशरण त्यागी आदि बड़ी संख्या में कार्यकर्त्ताओं के समन्वय और सहयोग से यह सफलता मिली।

सेवा-समर्पण का भावभरा अभिनन्दन

राठ। उत्तर प्रदेश

वरिष्ठ कार्यकर्त्ता मेजर चन्द्रशेखर मिश्र की कौस्तुभ जयंती (75 वर्ष पूरे होने पर) के उपलक्ष्य में एक संगोष्ठी का आयोजन हुआ। इस अवसर पर शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री योगेन्द्र गिरि विशेष रूप से उपस्थित थे। उन्होंने श्री चंद्रशेखर मिश्र जी की सेवाओं का अभिनंदन करते हुए लोगों को उनके युगधर्म की याद दिलाई। संगोष्ठी की अध्यक्षता डॉक्टर श्याम सुन्दर त्रिपाठी ने की।

कार्यक्रम के समापन अवसर पर प्रत्येक बुधवार को नये-नये गाँवों में जाकर निःशुल्क दवा वितरण का काम करने का संकल्प लिया गया। सभी ने मिश्र जी पर पुष्पवृष्टि करते हुए उनके प्रति अपनी मंगल कामना व्यक्त की।

मेजर चन्द्रशेखर मिश्र की कौस्तुभ जयंती के उपलक्ष्य

अमृत कुम्भ स्मारिका का विमोचन करते गणमान्य

में 'अमृत पर्व' स्मारिका भी प्रकाशित की गई है, जिसका विमोचन इस संगोष्ठी में हुआ। अमृत पर्व का सम्पादन डा. लक्ष्मण लाल त्रिपाठी ने किया है।

विद्या मनुष्य के लिए एक दोषहीन अविनाशी निधि है। उसके सामने दूसरे प्रकार की दौलत कुछ भी नहीं है। - सन्त तिरुवल्लुवर

युवाओं को दिशा देने हेतु आयोजित हुई युवा कार्यशालाएँ एवं विचार गोष्ठियाँ

बी.एस.पी. हायर सेकेण्ड्री स्कूल भिलाई में डिवाइन वर्कशॉप

भिलाई। छत्तीसगढ़

युवाओं को जाग्रत कर उन्हें सही मार्ग दिखाने के लिए दिया छत्तीसगढ़ द्वारा पिछले कई वर्षों से विभिन्न स्कूल-कॉलेजों में कार्यशालाएँ आयोजित की जा रही हैं। इसी क्रम में 13 अगस्त को बी.एस.पी. हायर सेकेण्ड्री स्कूल सेक्टर 10 भिलाई में अपनी वर्कशॉप श्रृंखला का 1088वाँ डिवाइन वर्कशॉप आयोजित किया गया, जिसमें 150 बच्चों ने भाग लिया। इसमें डॉ. पी.एल साव एवं डॉ. योगेन्द्र कुमार ने युवाओं को प्रतिभा विकास व उसके सुनियोजन के लिए प्रेरित किया। साथ ही पर्यावरण संरक्षण के लिए पेड़ लगाने, स्वच्छता अभियान चलाने, सादा जीवन-उच्च विचार के सूत्रों को स्वयं उतारने एवं दूसरों को भी उसके लिए प्रेरित कर समाज निर्माण में योगदान देने हेतु आग्रह किया। इस अवसर पर स्कूल के प्राचार्य श्री अरविन्द वर्मा, नायडू कोचिंग क्लासेस के संचालक एस.नायडू आदि कई गणमान्य उपस्थित थे।

बी.एस.पी. हायर सेकेण्ड्री स्कूल में बच्चों को संबोधित करते परिजन

ओड़िशा के कई शहरों में उपजोन स्तरीय कार्यकर्त्ता गोष्ठी

भुवनेश्वर। ओड़िशा

विगत अगस्त और सितम्बर माह में दक्षिण पूर्व जोन शांतिकुंज के वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं की एक टोली छत्तीसगढ़ एवं ओड़िशा दौरे पर गई। इसमें छत्तीसगढ़ के रायपुर, जगदलपुर, अम्बिकापुर, कोरबा, बिलासपुर एवं ओड़िशा के भुवनेश्वर, ब्रह्मपुर, सम्बलपुर, राउरकेला, रायगडा, काशीपुर, कोरापुट, नवरंगपुर, मालकानगिरि व गजपति शहर में उपजोन स्तर पर कार्यकर्त्ताओं की गोष्ठयाँ लीं। इनमें से प्रत्येक स्थान पर 500 से 900 तक कार्यकर्त्ताओं ने भाग लिया। केन्द्र के निर्देशन में आयोजित इन गोष्ठियों का कई उद्देश्य था, यथा- कार्यकर्त्ताओं में जागरुकता लाना, जोनल संगठन को मजबूत बनाना, निष्क्रिय केन्द्रों में सक्रियता की ऊर्जा भरना, नये मण्डलों का गठन कर उनको दिशा एवं दायित्व सौंपना, शक्तिपीठ एवं जोनल कार्यकर्त्ताओं को मिलजुल कर कार्य करने हेतु सहमत कराना आदि है।

15 स्थानों पर संगोष्ठियाँ
12 हजार कार्यकर्त्ता शामिल हुए

इन गोष्ठियों को शान्तिकुञ्ज के वरिष्ठ कार्यकर्त्ता दक्षिण जोन प्रभारी डॉ. बृजमोहन गौड़, दक्षिण-पूर्व जोन के श्री अरुण खण्डागले, श्री पूरन चन्द्राकर व श्री शेषदेव बढ़ई सहित क्षेत्रीय जोन के कार्यकर्त्ताओं ने भी संबोधित किया। केन्द्रीय प्रतिनिधियों द्वारा विशेष रूप से संगठन सशक्तीकरण पर मार्गदर्शन दिया गया। साथ ही मिशन के साहित्य-पत्रिकाओं के प्रसार पर भी विशेष ध्यान दिया।

इसके अतिरिक्त ओड़िआ भाषा में प्रकाशित होने जा रही पाक्षिक प्रज्ञा अभियान पत्रिका के प्रचार-प्रसार पर ओड़िशा की गोष्ठियों में विशेष जोर दिया गया। इसके 19500 ग्राहक पहले से बन गए थे। अभी ओड़िशा दौरे में 6500 नये सदस्य बनाने के संकल्प उभर कर आये हैं। पुरी शक्तिपीठ के निर्माण के लिए भी अच्छे संकल्प उभरे हैं। आशा है शीघ्र ही जगन्नाथ धाम में गायत्री का प्रकाश केन्द्र भी तैयार हो जाएगा।

(ऊपर) कार्यकर्त्ताओं का मार्गदर्शन करते शांतिकुंज के वरिष्ठ प्रतिनिधि एवं (नीचे) भागीदार परिजन

बोहारा एवं पलारी में कार्यशाला

भिलाई। छत्तीसगढ़

गायत्री परिवार की युवा शाखा दिव्य भारत युवा संघ (दिया) छत्तीसगढ़ ने शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बोहारा एवं पलारी में 27 जुलाई को कार्यशाला का आयोजन किया। इसमें दोनों स्कूल के 350 से अधिक युवा छात्र छात्राओं ने लगा लिया। इसमें दिया प्रान्तीय संयोजक डॉ. पी एल साव, डॉ योगेन्द्र कुमार व इंजिनियर युगल किशोर साहू ने बच्चों को स्कूल की पढ़ाई के साथ-साथ अध्यात्म अवलम्बन के तीन तरीके- उपासना, साधना, आराधना के तत्त्वदर्शन को भी समझने और जीवन में उतारकर अच्छे नागरिक बनने हेतु प्रेरित किया।

कार्यशाला में भाग लेते विद्यार्थी

कार्यशाला के आयोजन में दिया प्रभारी गुरुर ब्लाक के श्री दीपक साहू, श्री द्वारिका ठाकुर, श्री नरेन्द्र साहू, श्री संदीप साहू, मोनिका साहू, दोनों स्कूल के प्राचार्य टी आर यादव, सी आर धुर्वे एवं अन्य शिक्षकों का विशेष योगदान रहा।

रामाधीन सिंह इंटर कॉलेज लखनऊ में कार्यशाला

लखनऊ। उत्तर प्रदेश

दिनांक 25 जुलाई को गायत्री परिवार, आलमबाग, लखनऊ द्वारा रामाधीन सिंह इंटर कॉलेज, डालीगंज, लखनऊ में कार्यशाला आयोजित किया गया जिसमें सैकड़ों छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। इसमें श्री अरुण श्रीवास्तव, श्री अशोक गुप्ता व श्री जी.एस. शर्मा ने व्यक्तित्व विकास, संस्कारित जीवन, अवसरों की पहचान व सदुपयोग आदि विषय पर मार्गदर्शन दिया तथा महापुरुषों का उदाहरण देते हुए उनके जीवन से सीख लेने की बात कही। इस अवसर पर श्री अनिल तिवारी, संयोजक आलमबाग, लखनऊ, श्री प्रभात कौशिक आदि परिजनों सहित कॉलेज के सभी सदस्य उपस्थित थे। कॉलेज के प्रधानाचार्य श्री एस.के.यादव ने कार्यशाला में दिए उपयोगी मार्गदर्शन की सराहना करते हुए गायत्री परिजनों का आभार व्यक्त किया। श्री अनिल तिवारी एवं श्री अरुण श्रीवास्तव ने प्रधानाचार्य को स्मृति चिन्ह एवं स्मारिका भेंट कर सम्मानित किया।

कार्यशाला में संबोधित करते गायत्री परिजन एवं भाग लेते कॉलेज के बच्चे

सुन्दर देवी मेमोरियल कॉलेज गुढानाभावत में कार्यशाला

बून्दी। राजस्थान

गायत्री परिवार की सक्रिय शाखा दिव्य भारत युवा संघ एवं युवा साथी सेवा संस्थान के संयुक्त तत्त्वावधान में 31 अगस्त को सुन्दर देवी मेमोरियल कॉलेज गुढानाभावत् में कार्यशाला आयोजित हुई। इसमें पीजी कॉलेज बून्दी से अर्थशास्त्र के सहायक व्याख्याता डॉ. संजय भल्ला, मुख्य अतिथि डॉ. बीएम सोनी, युवा साथी सेवा संस्थान के प्रदेश उपाध्यक्ष श्री राजाराम गोचर तथा गायत्री परिवार ट्रस्ट बून्दी के प्रतिनिधियों ने क्रमशः छात्रों को जीवन का लक्ष्य बनाकर उसकी प्राप्ति के लिए लगन के साथ कार्य करने, अपने हित के प्रति सदा सजग रहने, व्यसनों से दूर रहने, स्वावलम्बी बनने तथा भारतीय संस्कृति में निहित सफलता के रहस्य को समझने जैसे विषय पर विस्तार से मार्गदर्शन दिया। इस अवसर पर महाविद्यालय के अध्यापक रामदयाल जी, लोकेश जी, गीता जी व राघव जी सहित महाविद्यालय के सभी विद्यार्थी तथा मीडिया प्रभारी प्रतीक लाड़ला सहित अनेक गायत्री परिजन उपस्थित उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन विकास पांचाल ने किया।

बून्दी के कार्यक्रम में प्रतिभागी युवाशक्ति

चम्पापुर के गाँधी शिक्षाश्रम उच्च विद्यालय में कन्या कौशल शिविर

कटक। ओड़िशा

दिनांक 6 सितम्बर को कटक जिले के माहांगा ब्लाक स्थित कइथा, चम्पापुर के गांधी शिक्षाश्रम उच्च विद्यालय में कन्या कौशल शिविर का आयोजन हुआ। इसमें विद्यालय की सैकड़ों कन्याओं ने भाग लिया। दक्षिण-पूर्व जोन भुवनेश्वर की बहन विलासिनी साहू एवं बहन नमीता जी ने कन्याओं को कुशलता विकास के सूत्रों पर मार्गदर्शन दिया। उन्होंने कहा कि कन्याएँ समाज की वह ऊर्वर भूमि हैं जिनकी गोद से सुसंस्कारी नर-रत्न रूपी अनमोल फसल पैदा होती है। इसलिए कन्याओं को शिक्षित, स्वावलम्बी और सुसंस्कारी होना चाहिए। जिला संयोजक श्री लक्ष्मीधर प्रधान, गायत्री शक्तिपीठ कटक के मुख्य ट्रस्टी श्री अगाधु चरण प्रधान एवं परिव्राजक सुधांशु शेखर साहू ने प्रोजेक्टर के माध्यम से कौशल विकास सम्बन्धी कई पहलुओं पर प्रेजेंटेशन दिया।

साप्ताहिक यज्ञ, जप व युग सन्देश के प्रेरणाप्रद कार्यक्रम

गोकुलपुर, धमतरी। छत्तीसगढ़

गायत्री परिवार धमतरी के गोकुलपुर इकाई द्वारा एक वर्ष से लगातार सप्ताह में एक दिन किसी एक परिजन के घर में गायत्री यज्ञ, देवस्थापना, मन्त्र जप, युग सन्देश आदि का क्रम चलाया जा रहा है। इसमें उनके घर में 20-25 परिजन जाकर 10 हजार से अधिक मन्त्र जप करते हैं। लोगों को युग साहित्य का महत्त्व बताकर उसके नियमित स्वाध्याय, गायत्री चालीसा पाठ, अखण्ड ज्योति आदि पत्रिकाओं के सदस्य बनने तथा समयदान, अंशदान आदि के लिए भी प्रोत्साहित करते हैं। 5 अगस्त को श्री दिलीप नाग से मिली जानकारी के अनुसार इस नवसृजन कार्यक्रम में सैकड़ों नये लोग जुड़कर पूज्य गुरुदेव के बताए अनुसार जीवन जी रहे हैं और कार्य कर रहे हैं।

साप्ताहिक कार्यक्रम के तहत मन्त्र जप करते परिजन

इस कार्यक्रम में इकाई प्रमुख श्री गोविन्द मीनपाल, राजकुमार साहू, माखन साहू, कौशल, गजानन, घनश्याम, सन्तोष, लक्ष्मी, सरिता, यशोदा, सुभाषिनी, संगीता आदि परिजन महत्त्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। सप्ताह में एक दिन एक नया प्रभात लेकर आ रहा है।

सरस्वती विद्या मन्दिर में समारोह

कन्नौज। उत्तर प्रदेश

युवाओं को दिशा देने के लिए गायत्री परिवार की ओर से 8 सितम्बर को सरस्वती विद्या मन्दिर इण्टर कॉलेज में नवसृजन युवा संकल्प समारोह का आयोजन किया गया। इसमें शांतिकुंज प्रतिनिधि श्री प्रभाकर सक्सेना ने युवाओं को सकारात्मक चिन्तन और क्रियाकलापों को प्रमुखता देकर उसी दिशा में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि युवा ही ऐसी शक्ति है जो राष्ट्र को नयी ऊँचाइयों तक पहुँचा सकती है।

नगर पंचायत तिर्वागंज अध्यक्ष मीरा गुप्ता ने युवाओं को व्यसनों से बचने और अपनी प्रतिभाओं को राष्ट्र निर्माण में लगाने हेतु प्रेरित किया। इस मौके पर श्री प्रकाश शर्मा, हिमांशु तोमर, अनीता शर्मा, सरिता दुबे, आदि परिजन मौजूद रहे।

कार्यकर्त्ता प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर

नागपुर। महाराष्ट्र

अश्वमेध यज्ञ, नागपुर की रजत जयंती, अश्वमेध महायज्ञ मुम्बई तथा परम वंदनीया माताजी के जन्मशताब्दी वर्ष जैसे बड़े कार्यक्रमों को ध्यान में रखते हुए नागपुर में कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण शिविर श्रृंखला आयोजित की गई। यह कार्यक्रम चंद्रपुर-गौरखेड़ा, अमरावती, अकोला, गोंदिया, नागपुर तथा हिंगणघाट में सम्पन्न हुए।

कार्यक्रम श्रृंखला 25 जुलाई से आरंभ होकर 20 अगस्त तक चली। दक्षिण पश्चिम जोन प्रभारी श्री कैलाश महाजन, योगीराज बल्की, प्रकाश कोहींनकर व युगेन्द्र बिसेन की टोली ने इनका संचालन किया। बड़ी संख्या में कार्यकर्त्ताओं ने भाग लेकर कर्मकाण्ड, संस्कार, संगीत, संभाषण का प्रशिक्षण लिया।

इन शिविरों से कुल 125 टोलियों का निर्माण हुआ है। उन्हें घर-घर गायत्री यज्ञ उपासना के माध्यम से देवस्थापना, बलिवैश्व यज्ञ, पत्रिकाओं का सदस्य बनाना, नये मंडलों का गठन जैसे कार्यों का प्रशिक्षण और लक्ष्य दिया गया है।

संजीवनी साधना सत्र

अयोध्या। उत्तर प्रदेश

12 अगस्त से 20 अगस्त 2019 तक नूतन संजीवनी साधना सत्र सम्पन्न हुआ। इस बीच ही रक्षा बंधन व श्रावणी पर्व भी मनाया गया। इसके अंतर्गत दश स्नान, श्राद्ध तर्पण व हेमाद्री संकल्प आदि पूरे विधि-विधान से सम्पन्न हुए। सत्र के अंतिम दिवस (20 अगस्त को) में सरयू माता की गोद में समूह साधना एवं सरयू माता की आरती का उत्साहवर्धक कार्यक्रम भी रखा गया था। पुनः शक्तिपीठ पर आकर साधकों ने अणुव्रत लिया। साधकों ने साधना के दौरान हुई अपनी अनुभूतियाँ भी बताईं।

साधना सत्र के पश्चात प्रशस्ति पत्र के साथ साधक गण

40 दिवसीय जप अनुष्ठान की पूर्णाहूति

धमतरी। छत्तीसगढ़

गायत्री शक्तिपीठ धमतरी पर 40 दिनों में 115 साधकों द्वारा डेढ़ करोड गायत्री महामंत्र जप अनुष्ठान संपन्न किया गया। प्रत्येक साधक ने सवा लाख गायत्री मंत्र का जप किया। इस अनुष्ठान में जिले के धमतरी, कुरूद, मगरलोड, नगरी, एवं भखारा के साधक परिजनों का विशिष्ट सहयोग रहा। श्री दिलीप नाग ने कहा कि गायत्री उपासना-साधना से मनुष्य के दोष, दुर्गुण दूर होते हैं और जीवन में सुख, समृद्धि व शांति की प्राप्ति होती है।

गर्भोत्सव संस्कार

मध्य प्रदेश के सभी मेडिकल कॉलेजों में खुलेगा गर्भोत्सव संस्कार प्रकोष्ठ

जबलपुर। मध्य प्रदेश

गायत्री परिवार द्वारा चलाये जा रहे गर्भोत्सव संस्कार की उपयोगिता को देखते हुए मध्य प्रदेश सरकार की ओर से पहल हुई है कि इसे पूरे प्रदेश में शुरु किया जाय। गायत्री परिवार के श्री मनोज जैन से मिली जानकारी के अनुसार मध्य प्रदेश की राज्यपाल आनन्दी बेन ने इस पायलट प्रोजेक्ट को प्रदेश के सभी सरकारी मेडिकल कॉलेजों में प्रारम्भ करने के निर्देश दिये हैं। इसके लिए खास रूप से पृथक् से प्रकोष्ठ खोले जायेंगे जिसमें प्रदेश के आयुर्विज्ञान विश्वविद्यालय की निगरानी में वैज्ञानिक नजरिए से जाँच की जायेगी। इसमें महिलाओं के गर्भधारण से लेकर प्रसव के बाद तक की अवधि में हुए गर्भोत्सव संस्कार के प्रभाव पर अध्ययन किया जाएगा। देखा जाएगा कि सामान्य शिशुओं की अपेक्षा संस्कार की प्रक्रिया से गुजरे शिशुओं में क्या कुछ खास नजर आ रहा है?

गायत्री परिवार का प्रयत्न है कि आने वाली पीढ़ी पूरी तरह से स्वस्थ, सबल और सुसंस्कारी बने। गर्भोत्सव संस्कार इसका अत्यन्त प्रभावशाली वैज्ञानिक प्रयोग है।

गायत्री परिवार जबलपुर की सक्रिय कार्यकर्त्ता डॉ. अमिता सक्सेना के अनुसार माननीय राज्यपाल जी ने मेडिकॉल कॉलेजों के प्रकोष्ठों में संस्कार कराने की जिम्मेदारी गायत्री परिवार को सौंपी है जिसे परिवार ने सहर्ष स्वीकार किया है। मध्य प्रदेश आयुर्विज्ञान विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. आरएस शर्मा ने 15 जुलाई को राजभवन में गर्भोत्सव संस्कार की प्रगति और परिणाम पर एक प्रेजेंटेशन दिया था जिसकी समीक्षा के बाद राज्यपाल ने यह अनुमति प्रदान की है। अभी यह 10 सरकारी मेडिकॉल कॉलेजों में संचालित है जहाँ प्रकोष्ठ बनेंगे। इसके साथ नीजी अस्पतालों को भी जोड़ा गया है। आगे पूरे देश के चिकित्सा केन्द्रों पर इसे प्रारम्भ करने की योजना है।

स्त्रीरोग विशेषज्ञ डॉ. अमिता सक्सेना ने बताया कि इस प्रोजेक्ट में चिकित्सा कराने आयी गर्भवती महिलाओं को गर्भ परीक्षण व चिकित्सा के साथ-साथ खाना-पान आदि में आवश्यक सावधानी, गर्भ के दौरान पालन करने योग्य आध्यात्मिक दिनचर्या, योग-व्यायाम, अच्छे चिन्तन आदि का प्रशिक्षण भी दिया जाएगा जिसके आधार पर गर्भस्थ शिशु को स्वस्थ, सबल और सुसंस्कारी बनाने में सहायता हो।

20 गाँवों की 93 बहिनों ने कराया पुंसवन संस्कार

जीजामगाँव। छत्तीसगढ़

दिनांक 4 जुलाई को कुरुद ब्लाक के जीजामगाँव में गर्भोत्सव संस्कार आयोजित किया गया। इसमें निकटवर्ती 20 गाँवों की 93 गर्भवती बहनों का पुंसवन संस्कार किया गया। इस अवसर पर सरला कोसरिया ने कहा कि सन्तान के निर्माण में माताओं की ही अहम् भूमिका होती है। वे अपने उत्तम आचार-विचारों के प्रभाव-प्रयास से सुसंस्कारी सन्तानों का निर्माण कर सकती हैं।

उल्लेखनीय है कि जीजामगाँव गायत्री परिवार द्वारा 2019 में हुए कार्यक्रमों में यह तीसरा कार्यक्रम है जो 9 कुण्डीय गायत्री यज्ञ के साथ सम्पन्न हुआ। अब तक 114 बहनें संस्कार करा चुकी हैं।

इसमें जिला समन्वयक श्री दिलीप नाग, रायपुर जोन के श्री सूरज लम्बा, सरपंच श्रीमती सीमा बघेल व दुर्ग से आये श्री के.के. विनोद जी ने भी संस्कार के महत्त्व पर संबोधन किया। इस अवसर पर श्री रामपाल कौशिक, रामचन्द मेश्राम, प्रदीप देवांगन धमतरी, अभनपुर के श्री आर.एस. चौरसिया आदि अनेक परिजन उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन वरिष्ठ कार्यकर्त्ता श्री ओमप्रकाश साहू जी ने किया।

धमतरी। छत्तीसगढ़

'आओ गढ़े संस्कारवान पीढ़ी' अभियान को गति देते हुए धमतरी शाखा ने 12 बहनों का सामूहिक पुंसवन संस्कार संपन्न किया। कार्यक्रम का संचालन शांतिकुञ्ज से प्रशिक्षित श्रीमती प्रमिला साहू, सरिता सिन्हा, लक्ष्मी साहू एवं सावित्री पटेल की टोली ने किया। जिला समन्वयक श्री दिलीप नाग ने संस्कार की महत्ता बतायी। उन्होंने बताया कि गर्भस्थ शिशु का विकास तीन माह से ही तेजी से होने लगता है। पुंसवन संस्कार शिशु को चरित्रवान, गुणवान एवं संस्कारवान बनाने की प्रेरणा देने का विधान है।

हरीतिमा संवर्धन के नैष्ठिक प्रयास

बाड़मेर। राजस्थान

युग नर्माण योजना के शत सूत्रीय कार्यक्रम के अन्तर्गत हरितिमा संवर्धन एवं पर्यावरण संरक्षण के उद्देश्य से गायत्री परिवार बाड़मेर ने इस वर्ष विद्यार्थियों के माध्यम से 2100 पौधे लगवाने का संकल्प लिया था। इसके लिए भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा में भागीदारी करने वाले विद्यालयों में सघन वृक्षारोपण कार्यक्रम शुरू किया गया जिसमें बच्चे बहुत ही उत्साह के साथ पौधे लगाए। गायत्री शक्तिपीठ के व्यवस्थापक श्री मंगला राम विश्नोई के अनुसार अब तक जिले की 24 सीनियर माध्यमिक विद्यालयों में 1500 छायादार वृक्षों नीम, कंरज, शीशम, सूरेल तथा खेजड़ी के पौधे लगवाये जा चुके हैं। इस हेतु विशेष शुल्क देकर बड़े पौधों की व्यवस्था सरकारी नर्सरी से की गई। इस कार्यक्रम की जिम्मेदारी उपजोन जोधपुर संयोजक श्री चूनाराम विश्नोई के नेतृत्व में श्री सांवला राम चौधरी, छैलपुरी गोस्वामी एवं गोपाराम चितारा ने संभाली है।

24 विद्यालयों में पौधारोपण
1500 पौधे लगाए, 2100 का है संकल्प

इसी तरह इस शाखा द्वारा हरित विधानसभा महाभियान भी चलाया जा रहा है जिसके अन्तर्गत 2 सितम्बर को ग्राम पंचायत बांदरा में पौधारोपण किया गया। इसके संरक्षण का दायित्व ग्रामीणों ने लिया है।

दमोह के युवाओं ने मनाया दसवाँ पौधारोपण रविवार

दमोह। मध्य प्रदेश

गायत्री परिवार युवा प्रकोष्ठ दमोह के युवा विगत 10 सप्ताह से रविवार के दिन पौधारोपण कर रहे हैं। विशेष पर्व-दिवसों पर भी पौधे रोपने का क्रम चला रखा है। अभी 8 सितम्बर को स्थानीय डायमण्ड पार्क में 51 पौधे लगाकर पर्यावरण संरक्षण का सन्देश दिया। श्री अनूप श्रवास्तव के अनुसार इस अभियान में 80 युवा जुड़े हैं जो अपने पैसों से खरीदकर पौधे लगाते हैं। अभी तक सर्किट हाऊस पहाड़ी, शान्तिनगर कॉलोनी, बालिका छात्रावास, उत्कृष्ट विद्यालय, जबलपुर नाका मुक्तिधाम, डीटीसी हेल्थ डिपार्टमेंट, डीजे बंगला, दमयन्तीपुरम् जटाशंकर मन्दिर आदि स्थानों पर 600 से अधिक फलदार व छायादार पौधे लगा चुके हैं। गायत्री परिवार के वरिष्ठ पश्रिजन भी इसमें सहयोग कर रहे हैं।

10वें पौधारोपण सप्ताह पर पौधे लगाते दमोह के युवा

पौधारोपण करने वाले युवाओं में श्री प्रमोद विश्वकर्मा, उमाशंकर साहू, राहुल द्विवेदी, पवन विश्वकर्मा, राघवेन्द्र नेमा, संजय जैन, अमन उपाध्याय, वेद प्रकाश दुबे, भूपसिंह ठाकुर, पुष्पेन्द्र शर्मा, पुनीत मिश्रा, महेश कुशवाहा, खिलान सिंह ठाकुर, दीपक खम्परिया आदि प्रमुख हैं।

बाल गजानन पहाड़ी पर 200 पौधे रोपे गए

बुरहानपुर। म. प्र.

दिनांक 9 सितम्बर को श्रीराम गुरुकुल खड़कोद के विद्यार्थी, आचार्य और श्री बाल गजानन मन्दिर के युवाओं ने मिलकर चिंचाला के सतपुड़ा पर्वत स्थित बाल गजानन पहाड़ी पर शीशम, नीम, करंज, आँवला, इमली, जामुन आदि के 200 पौधे रोपण किये। गायत्री परिवार यहाँ अब तक 1500 पौधे रोपण कर चुका है। पिछली बार 2400 पौधे लगाए थे जो हरे-भरे होकर विकसित हो रहे हैं। गुरुकुल के श्री सुरेश चौधरी ने बताया कि सतपुड़ा की पहाड़ियाँ बुरहानपुर की प्राण हैं। इस शहर की आबादी को इन्हीं से मनमोहक हरियाली का दृश्य, सुशीतल हवा और पोषक प्राणऊर्जा मिलती है। श्री आशीष शुक्ला व श्री गोविन्द यादव ने भी वृक्षारोपण के महत्त्व पर विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर श्री आश्विन महाजन, उमेश तिवारी, रविन्द्र ठाकुर, कीर्ति जैन, संजय सपकाले सहित बड़ी संख्या में गुरुकुल के छात्र-छात्राएँ एवं अनेक गायत्री परिजन उपस्थित थे।

बाल गजानन पर्वत पर पौधे लगाते युवा

सोनीपत यूथ ग्रुप का 16वाँ पौधारोपण कार्यक्रम

सोनीपत। हरियाणा

गायत्री परिवार यूथ ग्रुप सोनीपत ने इस वर्ष का 16वाँ पौधारोपण हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी, सेक्टर-12 में 8 सितम्बर को किया। गायत्री परिवार के श्री यशपाल गाहल्याण और श्री अमरीश त्यागी के अनुसार अब तक इन युवाओं द्वारा 258 पौधे लगाये जा चुके हैं।

इस पौधारोपण में सर्वश्री अनिल पांचाल, विनोद सैन, वंश, राजू, डम्बर सिंह, रंजना गाहल्याण, तनिष्क, शैली, मधु पांचाल, रेखा त्यागी, उम सैन सहित सेक्टर-12 की महिला मंडल सदस्याओं ने भी भाग लिया।

गोलमुरी विद्यालय परिसर में बच्चों ने पौधे लगाए

जमशेदपुर। झारखण्ड

गायत्री परिवार नवयुगदल, युवा प्रकोष्ठ की ओर से गोलमुरी स्थित समर्थ आवासीय विद्यालय परिसर में वृक्षारोपण अभियान चलाकर छात्र-छात्राओं के सहयोग से पौधारोपण किया गया। इसमें नीम, आम, बरगद, पीपल आदि के बड़ी संख्या में पौधे लगाए गए। इस दौरान स्कूल की प्रधानाध्यापिका बानी मैम, सावित्री मैम मौजूद रहीं। वहीं गायत्री परिवार से जितेन्द्र कुमार सचान, रूबी शर्मा, शकुन्तला शाल, निर्मल कुमार, परमेश्वर कालिंदी व सरोज कुमार मौजूद रहे।

विद्यालय परिसर पर पौधे लगाने को तैयार बच्चे

मुक्तिधाम में पौधे रोपे

सतना। मध्य प्रदेश

गायत्री परिवार सतना द्वारा नई बस्ती गणेश नगर स्थित मुक्तिधाम में स्वर्गीय वाल्मीकि विश्वकर्मा की पुण्य स्मृति में वृक्षारोपण कराया गया। पौधों की सुरक्षा व संरक्षण की व्यवस्था के लिए मुक्तिधाम के चहारदिवार गेट पर ताला चाबी की भी व्यवस्था कर सौंप दिया गया। इस पुण्य कार्य में वार्ड पार्षद कमला यादव, महेन्द्र तिवारी, एशियन पाण्डेय, एसपी पाठक समेत गायत्री परिवार के सभी परिजनों ने हिस्सा लिया।

योग केन्द्र का शुभारम्भ

आंवरी। छत्तीसगढ़

दिनांक 27 अगस्त को गायत्री चेतना केन्द्र आंवरी के आश्रित ग्राम ब्लेजर के समाजिक मंगल भवन में गायत्री परिवार के कार्यकर्ता श्री विनोद ठाकुर जी ने योगासन केन्द्र का शुभारंभ किया है। इसमें प्रति दिन प्रातः 6:00 से 7:00 बजे तक प्रज्ञायोग, सूर्य नमस्कार, विविध आसन, प्राणायाम आदि के साथ-साथ बच्चों को नैतिक शिक्षा भी दी जा रही है। इसमें बढ़-चढ़कर बच्चे भाग ले रहे हैं।

मृतकभोज की जगह रचनात्मक कार्यों की शानदार पहल

पिपरिया। मध्य प्रदेश

किरार समाज ने दिया जागरुकता का परिचय

गायत्री परिवार पिपरिया द्वारा मृतकभोज जैसी कुरीतियों को रोककर समाज में अच्छे कार्यों को गतिशील बनाने की दिशा में सराहनीय प्रयास किया जा रहा है। 14 अगस्त को इसका एक अच्छा उदाहरण देखने को मिला। किरार समाज के होशंगाबाद जिलाध्यक्ष श्री भगवत सिंह पटेल के बड़े पिताजी तथा श्री नेपाल सिंह पटेल, डालचन्द पटेल व तीरथ पटेल के पिताजी श्री कृपाराम पटेल के निधन होने पर उन्हें श्रद्धांजलि देने हेतु समाज के जिले भर के सदस्य उपस्थित हुए। इस अवसर पर गायत्री परिवार होशंगाबाद के संयोजक श्री सुबोध बारोलिया आदि परिजन एवं किरार समाज के श्री उमेद सिंह पटेल, प्रभात चौधरी, नेपाल पटेल, बिन्दु चौधरी आदि वरिष्ठ सदस्यों की संयुक्त प्रयास से गायत्री यज्ञ व श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया जिसमें दिवंगत आत्मा की शांति के लिए आहुतियों के साथ श्रद्धाञ्जलि अर्पित की। उल्लेखनीय पहल यह हुई कि इसमें मृतकभोज को कम करते हुए उसकी जगह गरमी में प्याऊ तथा बरसात में पौधे लगाने, निःशुल्क चिकित्सा शिविर आयोजित करने, गरीब बच्चों को पढ़ाने में सहयोग देने जैसे रचनात्मक कार्यों को गति देने की चर्चा पर सर्वसम्मति बनी और इन पर अमल के लिए सभी ने उत्साह दिखाया।

श्रद्धांजलि के पश्चात पौधे लगाते समाज के गणमान्य

मृतकभोज न करने तथा श्मशान में पौधे लगाने का संकल्प

अटरू। राजस्थान। दिनांक 10 सितंबर को गायत्री परिवार की प्रेरणा व मीणा समाज के प्रयास से अर्डान्द (अटरू) में स्व. छितरलाल जी मीणा के तीसरे दिन फूल चुनने की रस्म के अवसर पर उनके बेटे श्री रामबहादुर ने मृतकभोज न कराने तथा अपने पूज्य पिताजी की स्मृति में श्मशान में पौधे लगाने और पालने का संकल्प लिया। उनके इस संकल्प के लिए सभी लोगों ने साधुवाद दिया।

महाराष्ट्र और कर्नाटक में जारी हैं गायत्री परिवार की बाढ़ राहत सेवाएँ

बाढ़ प्रभावित गाँवों का सर्वे

बेस कैम्प का दृश्य

गाँवों में राहत सामग्री बाँटने पहुँचे परिजन

12 दिन चला भोजनालय, 6000 लोगों ने प्रतिदिन भोजन किया
7200 परिवारों को राशन और कपड़े बाँटे
विद्यार्थियों की सहायता और पीड़ितों के पुनर्वास का काम जारी है

सेवा-संवेदना ही धर्म-अध्यात्म की और गायत्री परिवार की सच्ची पहचान है। अपने ही भाई कष्ट में हों और भगवान के भक्त चैन की बंसी बजायें, यह हो नहीं सकता। महाराष्ट्र और कर्नाटक जिन दिनों बाढ़ का कहर झेल रहा था, तब गायत्री परिवार ने अपने सेवाधर्म को बखूबी निभाया।

महाराष्ट्र एवं कर्नाटक की अनेक शाखाओं ने सहयोग का हाथ बढ़ाया। 7 से 18 अगस्त तक इचलकरंजी में प्रतिदिन भोजनालय चलाया गया। 6000 विस्थापितों के भोजन की व्यवस्था गायत्री परिवार ने की। बाढ़ का पानी उतरने के बाद गायत्री परिवार ने बेलगाम जिले के निप्पाणी के आसपास के चार गाँव और कोल्हापुर जिले के इचलकरंजी क्षेत्र का सर्वे किया। तत्पश्चात् निप्पाणी क्षेत्र के लगभग 1200 परिवारों को और इचलकरंजी क्षेत्र के 5000 परिवारों को सूखा राशन, कपड़े आदि जीवनावश्यक वस्तुएँ प्रदान कीं।

बाढ़ राहत कार्यों का नेतृत्व शांतिकुंज की प्रेरणा एवं प्रत्यक्ष मार्गदर्शन में इचलकरंजी (कोल्हापुर) के वरिष्ठ परिजन श्री राजेन्द्र बोहरा और बेलगाम (कर्नाटक) के श्री ओमप्रकाश राजगुरु ने किया। श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी, श्रद्धेया जीजी एवं दक्षिण जोन प्रभारी शांतिकुंज प्रतिनिधि श्री बृजमोहन गौड़ की प्रेरणा-परामर्श के साथ शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री उत्तम गायकवाड़ तुरंत इचलकरंजी भेजे गये थे। उन्होंने प्रभावित गाँवों के सर्वे से लेकर राहत सामग्री वितरण और आगामी राहत कार्यों के निर्धारण में प्रत्यक्ष सहयोग किया। श्रद्धेय डॉ. साहब, श्रद्धेया जीजी एवं शान्तिकुञ्ज का व्यवस्थातंत्र भी सतत सम्पर्क में रहा। परिस्थितियों के अनुरूप परिजनों को शान्तिकुञ्ज से सहयोग-मार्गदर्शन मिलता रहा।

इस पुनीत कार्य में श्री ओम पुरोहित, श्री लक्ष्मीकांत तिवारी, श्री कैलाश पुरोहित, श्री गोपाल सोनी, श्री रामकिशोर तिवारी श्री अशोक पुरोहित, श्री मांगीलाल पुरोहित एवं महिला मण्डल का अग्रणीय योगदान रहा।

बाढ़ का पानी उतरने के बाद शान्तिकुञ्ज द्वारा पीड़ितों की मदद करने का कार्य निरंतर चल रहा है। स्कूली बच्चों को पुस्तक, कॉपी, बस्ते आदि उपलब्ध कराने और ग्रामवासियों के पुनर्वास की विभिन्न योजनाओं पर काम चल रहा है। समग्र राहत कार्यों में मुम्बई, पुणे, नाशिक, बैंगलोर, तिरुपुर, बेलगाम और इचलकरंजी शाखाओं का भरपूर सहयोग मिला है।

हिन्दी हमारा गौरव है।

• श्री शरद पारधी, कुलपति, देसंविवि.

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के हिन्दी एवं शिक्षा-शास्त्र विभाग के संयुक्त तत्त्वावधान में हिन्दी दिवस पर निबन्ध प्रतियोगिता, कविता पाठ जैसे विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। इसके उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि कुलपति श्री शरद पारधी जी ने कहा कि हिन्दी हमारा गौरव है। हमारी भावनात्मक अभिव्यक्ति का सर्वश्रेष्ठ माध्यम है। हमारे मन में हिन्दी के प्रति हमेशा सम्मान एवं अभिमान बना रहना चाहिए।

ईश वंदना के साथ कार्यक्रम का शुभारम्भ करती छात्राएँ

कुलपति जी के साथ शिक्षा-शास्त्र विभाग के संकायाध्यक्ष डॉ. कृष्णा झरे, हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ. नरेंद्र सिंह, योग विभागाध्यक्ष प्रो. सुरेश वर्णवाल, शिक्षा-शास्त्र विभाग की विभागाध्यक्षा डॉ. ममता अरोड़ा ने दीप प्रज्वलन कर हिन्दी दिवस समारोह का शुभारंभ किया। इस अवसर पर प्रायः सभी ने हिन्दी की विशेषता और उपयोगिता पर अपने विचार व्यक्त किये।

इस अवसर पर विद्यार्थियों ने हिन्दी भाषा पर विभिन्न मॉडल, पोस्टर भी प्रस्तुत किए। विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। इस अवसर पर देसंविवि के हिन्दी एवं शिक्षाशास्त्र विभाग के शिक्षक-शिक्षिका, एवं छात्र-छात्राएँ मुख्य रूप से उपस्थित रहे।

गुजरात की हलचल

सामूहिक साधना अनुष्ठान

गायत्री शक्तिपीठ क्रान्तिकुञ्ज अहमदाबाद से जुड़े 500 साधकों ने पाँच करोड़ गायत्री महामंत्र का सामूहिक अनुष्ठान किया। 30 अगस्त को 51 कुण्डीय यज्ञ के साथ इसकी पूर्णाहुति हुई। अनुष्ठान में शामिल 280 साधक शान्तिकुञ्ज आये और पाँच दिवसीय सत्र में भाग लिया।

अहमदाबाद की ही ओढव शाखा से जुड़े साधकों ने सवा तीन करोड़ गायत्री महामंत्र जप और लाखों मंत्र लेखन का सामूहिक अनुष्ठान किया। जन्माष्टमी के दिन 7 कुण्डीय यज्ञ और आदिनाथ नगर में 3 कुण्डीय यज्ञ के साथ पूर्णाहुति हुई।

शिक्षकों को दिये प्रज्ञा अभियान

साणंद शाखा के परिव्राजक श्री विकास मिश्रा विद्यालयों में विद्यार्थियों के व्यक्तित्व परिष्कार के लिए बड़ा अभियान चला रहे हैं। अब उन्होंने प्रत्येक विद्यालय के शिक्षकों तक प्रज्ञा अभियान पहुँचाकर मिशन की वैश्विक गतिविधियों से अवगत कराने का कार्य भी आरंभ कर दिया है।

शिक्षक चिन्तन शिविर

गायत्री शक्तिपीठ नवसारी पर आयोजित शिक्षक चिन्तन शिविर में नवसारी तथा जलालपुर तहसील के प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों के 600 शिक्षकों ने भाग लिया। केन्द्रीय प्रतिनिधि श्री प्रदीप दीक्षित ने इसे संबोधित करते हुए लोगों को भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा के उद्देश्यों से अवगत कराया। उन्होंने विद्यार्थियों के नैतिक, बौद्धिक विकास के लिए विद्यालयों में जन्मदिवस मनाने, सद्वाक्य लगाने, व्यसनमुक्ति अभियान चलाने जैसे कई कार्यक्रमों को चलाने का अनुरोध भी किया। शंकरभाई पटेल, पूनाभाई पटेल और प्रेमाभाई पटेल भी मंचासीन थे।

परिव्राजक प्रशिक्षण सत्र

परम पूज्य गुरुदेव की आकांक्षा के अनुरूप जीवन को श्रेष्ठता के ढाँचे में ढालने के लिए शान्तिकुञ्ज में चलने वाले परिव्राजक प्रशिक्षण सत्रों की गुणवत्ता में आमूलचूल परिवर्तन किया गया है। यह सत्र अब वरिष्ठ प्रतिनिधियों के मार्गदर्शन में चलाया जा रहा है। कृपया लाभ उठायें, अपने क्षेत्र के सेवाभावी समयदानियों को भी प्रेरित करें, भगवान की दिव्य योजना में भागीदारी का श्रेय-सौभाग्य प्राप्त करें। यह शिविर हर माह की 1 से 29 तक की तारीखों में चलते हैं।

नोट : गुजरात प्रांत की सक्रियता के विस्तृत समाचार प्रज्ञा अभियान के गुजराती संस्करण में प्रकाशित होते हैं।

अक्टूबर-नवम्बर 2019 में शान्तिकुञ्ज में आयोजित होने वाले सत्र

18 से 20 अक्टूबर	राष्ट्रीय कार्यशाला (सामाजिक संस्था एवं समाज)
20 अक्टूबर	यज्ञोपैथी चिकित्सा शिविर
19 से 21 अक्टूबर	**व्यसनमुत भारत (प्रशिक्षक प्रशिक्षण सत्र)**
01 से 05 नवम्बर	आपदा प्रबन्धन (प्रशिक्षक प्रशिक्षण सत्र)
01 से 05 नवम्बर	तीर्थ सेवन सत्र (बाँग्ला भाषा में)
07 से 08 नवम्बर	गर्भोत्सव सम्मेलन
10 से 14 नवम्बर	कन्या कौशल प्रशिक्षक प्रशिक्षण सत्र (गुजरात)
15 से 17 नवम्बर	किशोर कौशल्य प्रशिक्षक प्रशिक्षण सत्र (पश्चिम, दक्षिण पश्चिम एवं पश्चिमोत्तर जोन)
18 से 20 नवम्बर	कॉर्पोरेट ट्रेनिंग शिविर
19 से 23 नवम्बर	कन्या कौशल प्रशिक्षक प्रशिक्षण सत्र (मध्य प्रदेश)
20 नवम्बर	यज्ञोपैथी चिकित्सा शिविर
24 से 26 नवम्बर	राष्ट्रीय कार्यशाला (अभियंता)
26 से 30 नवम्बर	कन्या कौशल प्रशिक्षक प्रशिक्षण सत्र (महाराष्ट्र)

• उपरोक्त शिविर विशिष्ट उद्देश्यों और विशिष्ट वर्गों के लिए आयोजित हैं।
• इनमें केवल पंजीकृत प्रतिभागी ही भाग ले सकते हैं।
• सभी शिविरों में प्रशिक्षण कक्षों की क्षमता के अनुरूप सीमित संख्या में ही परिजन भाग ले सकते हैं। फिर भी अधिक से अधिक प्रतिभागी इनका लाभ ले सकें, ऐसा शान्तिकुञ्ज का प्रयास है।
• प्रतिभागियों की योग्यता, शिविर संबंधी विस्तृत जानकारी तथा **पंजीयन के लिए** सम्पर्क सूत्र अधोलिखित हैं।

ऑनलाइन- awgp.org ईमेल- shivir@awgp.org
व्हाट्सएप- 9810398041 मोबाइल- 9258360655, 9258369749

अंतःऊर्जा संवर्धन एवं आत्म परिष्कार की असाधारण अनुभूतियाँ कराने वाले
अंतःऊर्जा जागरण सत्रों की शृंखला

शान्तिकुञ्ज में पुनः प्रारंभ हो रही है। शिविर की तिथियाँ निम्नानुसार हैं।

नवम्बर 2019 : 06 से 10, 11 से 15, 16 से 20, 21 से 25, 26 से 30
दिसम्बर 2019 : 01 से 05, 06 से 10, 11 से 15, 16 से 20, 21 से 25
जनवरी 2020 : 06 से 10, 11 से 15, 16 से 20, 21 से 25,
फरवरी 2020 : 06 से 10, 11 से 15, 16 से 20, 21 से 25, 26 से 01 मार्च

नोट : साधना के अनुशासन कड़े हैं, पूर्व में साधना-अनुष्ठान के अभ्यासी आवेदकों को ही कड़ी जाँच-पड़ताल के बाद ही अनुमति दी जाएगी। 20 से 40 वर्ष वय के साधकों को प्राथमिकता दी जाएगी। लेकिन चयन प्रमुख आधार साधना की योग्यता ही होगा। योग्य साधकों को आयु सीमा से हटकर भी अनुमति दी जा सकती है और इस उच्च स्तरीय साधना के योग्य न पाये जाने पर अनुमति प्राप्त आवेदक को अस्वीकार भी किया जा सकता है।

अधिक जानकारी और आवेदन के लिए **शिविर विभाग, शान्तिकुञ्ज से** उपरोक्त ई-मेल, व्हॉट्सएप या मोबाइल पर संपर्क किया जा सकता है।

श्री उदयराम लांजेवार
पावन गुरुसत्ता की सूक्ष्म चेतना में विलीन हो गये

अखण्ड ज्योति (मराठी) के नियमित प्रकाशन तथा मराठी भाषा में प्रकाशित परम पूज्य गुरुदेव की 165 पुस्तकों के प्रकाशन में महत्त्वपूर्ण योगदान देने वाले शान्तिकुञ्ज के समर्पित कार्यकर्त्ता श्री उदयराम लांजेवार का 5 सितम्बर 2019 को आकस्मिक देहावसान हो गया। 10 सितम्बर को 'गुण निवेदन सभा' आयोजित कर उनकी धर्मपत्नी श्रीमती कविता लांजेवार, भाई पद्माकर लांजेवार सहित परिवारी जनों और समस्त शान्तिकुञ्ज परिवार ने उन्हें भावभीनी विदाई दी।

स्व. श्री उदयराम जी 1984 से सपरिवार शान्तिकुञ्ज को जीवनदानी कार्यकर्त्ता के रूप में सेवाएँ दे रहे थे। आरंभिक दिनों में उन्होंने आदरणीय श्री केसरी कपिल जी के साथ कार्यक्रम विभाग में और बाद में प्रकाशन विभाग (पीपीडी) में सेवाएँ प्रदान कीं। गुण निवेदन सभा में शान्तिकुञ्ज के वरिष्ठ कार्यकर्त्ता श्री वीरेश्वर उपाध्याय, श्री शिवप्रसाद मिश्रा, श्री कपिल जी एवं मराठी अखण्ड ज्योति के सम्पादक श्री शरद पारधी जी ने उन्हें अत्यंत विनम्र, व्यवहार कुशल, जिम्मेदार, अनुशासित, सेवाभावी कार्यकर्त्ता के रूप में याद किया। समस्त शान्तिकुञ्ज परिवार ने उनकी आत्मा की शान्ति, सद्गति तथा उनके परिवारी जनों को इस आघात को सहने की शक्ति मिले, ऐसी प्रार्थना पावन गुरुसत्ता से की।

श्री कपिल जी ने कहा कि सन् 1984 में पहली बार 24 टोलियाँ शान्तिकुञ्ज से निकलीं, जिनमें 3750 कार्यक्रम हुए। बाद में अश्वमेधों की शृंखला आरंभ हुई। इतने विराट तंत्र को उनके जैसे परिश्रमी कार्यकर्त्ता के बलबूते पर ही सँभालना संभव हुआ।

पीपीडी विभाग उन्हें उनकी नियमितता, कर्मठता, विनम्रता के लिए सदैव याद करेगा।

किसी का मनोबल बढ़ाना आत्मसंतोष बढ़ाने वाला उच्च कोटि का पुण्यदायी कार्य है।

नवप्रवेशी छात्रों को नई दिशा के चयन की प्रेरणा

उन्नयन 2019

नवप्रवेशी विद्यार्थियों के स्वागत की एक आदर्श परम्परा

'उन्नयन' देव संस्कृति विश्वविद्यालय में वरिष्ठ विद्यार्थियों द्वारा नवप्रवेशी साथियों को विश्वविद्यालय की विचारधारा, संस्कृति परम्पराओं का परिचय देने की एक उदात्त परम्परा है। यह समारोह विद्यार्थियों को जीवन लक्ष्य का सही बोध कराने और बड़े उद्देश्यों के लिए जीने की प्रेरणा देता है। जहाँ अनेक शिक्षण संस्थानों में 'रैगिंग' की कुत्सित परम्परा प्रचलित है, वहीं देव संस्कृति विश्वविद्यालय ने 'उन्नयन' के रूप में नवप्रवेशी विद्यार्थियों के स्वागत की एक आदर्श परम्परा अपनाई है।

30 अगस्त को देव संस्कृति विश्वविद्यालय में 'उन्नयन-2019' सम्पन्न हुआ। यह मनोरंजन नहीं, महान संदेश था अपने नवप्रवेशी साथियों के लिए। उनकी आस्था के, विचारों के, जीवन लक्ष्य के, संकल्प के उन्नयन का महापर्व था। समूह गीत, नृत्य, नाटिका, योग जैसे अनेक कार्यक्रम वरिष्ठ विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत किए गए। पावर पॉइण्ट के साथ देव संस्कृति की उत्कृष्टता के दर्शन कराए गए। यह सब मात्र मनोरंजन नहीं, एक सशक्त संदेश था।

उन्नयन-2019 कुलाधिपति श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी, कुलपति श्री शरद पारधी जी, प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी, कुलसचिव श्री बलदाऊ देवांगन की मुख्य उपस्थिति में आयोजित हुआ। विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन करने सभी आचार्य, अधिकारी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

उन्नयन-2019 की विषयवस्तु थी 'चलो गाँव की ओर'। हर प्रस्तुति में देश की गढ़वाली, बंगाली आदि अनेक संस्कृतियों की झलक थी। इस विषयवस्तु के आधार पर एक नाटिका भी प्रस्तुत की गई। एक गीत का तो सीधा संदेश था 'ये है उन्नयन, संस्कृतियों का मिलन। ये है उन्नयन नई दिशा का चयन।'

श्रद्धेय डॉ. साहब ने अपने आशीर्वचन में वरिष्ठ विद्यार्थियों की उदात्त सोच और उत्कृष्ट प्रस्तुतियों की भरपूर सराहना की। उन्होंने इसे आस्थाओं के उन्नयन का महापर्व बताया, जिसमें राष्ट्रीय उत्कर्ष की भावनाएँ थीं, ग्राम प्रधान भारतीय संस्कृति के पुनर्जीवन की योजना एवं संकल्प का समावेश था।

योगमय प्रस्तुतियों की सराहना करते हुए कुलाधिपति जी ने कहा कि योग संतुलित, व्यवस्थित, अनुशासित जीवन जीने की प्रेरणा देता है। योग से हर प्रकार के दुःखों का नाश होता है।

सांस्कृतिक कार्यक्रम से पूर्व विवि परिसर स्थित प्रज्ञेश्वर महादेव मंदिर में बच्चों के उज्ज्वल भविष्य हेतु दीपयज्ञ का आयोजन किया गया। इसमें विश्वविद्यालय के छात्र-छात्राओं सहित चीन से आये 25 विद्यार्थियों के दल ने भी भाग लिया।

वरिष्ठ विद्यार्थियों की प्रेरणादाई सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ

शिक्षक दिवस

सबसे बड़ा धर्म है उत्कृष्ट व्यक्तित्वों का निर्माण

- श्रद्धेय डॉ. प्रणव जी

आदर्श शिक्षक के रूप में श्रद्धेय कुलाधिपति डॉ. प्रणव जी का अभिनंदन करते कुलपति श्री शरद पारधी जी

भारतीय संस्कृति का चिंतन श्रेष्ठ गुरुओं के माध्यम से ही जन-जन तक पहुँचेगा। सार्थक शिक्षा मात्र सद्गुरु ही दे सकते हैं। जिनका व्यक्तित्व, चरित्र और व्यवहार उनके बताये ज्ञान को जीवन में उतारने की उमंग जगाता है, वही सच्चा शिक्षक है, वही सद्गुरु है।

5 सितम्बर को देव संस्कृति विश्वविद्यालय में मनाये गये शिक्षक दिवस समारोह में कुलाधिपति श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने भावविभोर आचार्यों एवं विद्यार्थियों से मिले सम्मान के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए इन शब्दों के साथ अपना संदेश दिया। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि इस विश्वविद्यालय की अद्वितीय शिक्षा के प्रभाव से अनेक ऐसे व्यक्तित्व उभरेंगे जो पूरे विश्व में जीवन विद्या एवं भारतीय संस्कृति का आलोक पहुँचायेंगे। इस अवसर पर कुलपति, प्रतिकुलपति, कुलसचिव, समस्त आचार्य, अधिकारी, सहयोगी, सभी विद्यार्थी उपस्थित थे।

समारोह के आरंभ में विश्वविद्यालय परिवार ने शॉल ओढ़ाकर एवं पुष्पगुच्छ अर्पित कर कुलाधिपति जी का अभिनंदन किया। तत्पश्चात् कई सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। इनमें सद्गुरु की महिमा, शिष्यों की श्रद्धा तथा उत्कृष्ट जीवन के निर्माण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता विद्यार्थियों द्वारा दोहराई गई थी। नारी शिक्षा पर मर्मस्पर्शी नाटिका प्रस्तुत की गई। एनिमेशन विभाग द्वारा निर्मित एक डॉक्यूमेण्ट्री ने बताया कि इस विश्वविद्यालय का कण-कण जीवन के निर्माण की प्रेरणा देता है।

कार्यक्रम के अंत में कुलाधिपति जी ने समस्त आचार्यों को सम्मानित किया। कार्यक्रम का संचालन विवि के आचार्य गोपाल शर्मा ने किया।

इस अवसर पर कुलाधिपति ने धन्वन्तरि ई-न्यूज लेटर, आयुर्वेद एवं समग्र स्वास्थ्य शोध गाथा, आयुर्वेद विभाग की नई वेबसाइट का विमोचन किया।

गायत्री विद्यापीठ में

गायत्री विद्यापीठ में शिक्षक दिवस पर वरिष्ठ विद्यार्थी शिक्षकों की भूमिका में दिखाई दिये। उन्होंने कनिष्ठ साथियों के साथ अपने अनुभव बाँटे। कई सांस्कृतिक कार्यक्रम के माध्यम से डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के व्यक्तित्व एवं कृतित्वों को उकेरा गया था।

श्रद्धेय का कथन

परम पूज्य गुरुदेव के प्रति : एक महान शिक्षक के रूप में परम पूज्य गुरुदेव की प्रेरणा और अनुदानों को बड़ी श्रद्धा के साथ याद किया, कहा कि मेरा जीवन उन्हीं के दिए ज्ञान का प्रसाद है।

डॉ. राधाकृष्णन के प्रति : डॉ. राधाकृष्णन को एक ऐसा आदर्श शिक्षक बताया, जिन्होंने पाश्चात्य मानसिकता को बदलने में बहुत बड़ा योगदान दिया। उन्होंने कहा कि डॉ. राधाकृष्णन के गीता पर दिए गए व्याख्यानों को सुनने के लिए भौतिक विज्ञानी भी बहुत लालायित रहते थे।

अपने विद्यार्थियों के प्रति : कहा कि मैं अपनी गीता और ध्यान की कक्षाओं के माध्यम से पूज्य गुरुदेव से मिले ज्ञान को आप तक पहुँचाने के लिए अपना सबकुछ झोंक देता हूँ। जीवन के मूल रहस्य जो इस विश्वविद्यालय में बताये और समझाये जाते हैं वह अन्य किसी विश्वविद्यालय में नहीं सिखाये जाते।

उत्कर्ष 2019

कला-संस्कृति का मनोरम दिग्दर्शन

गणेश विवेक के देवता हैं और वर्तमान युग में गणेशोत्सव पर्व है भगवान गणेश के प्रति अपनी श्रद्धा भावना के प्रदर्शन का। आज हर क्षेत्र में गणेशोत्सव का उल्लास बढ़ता जा रहा है, लेकिन उत्सव के साथ जुड़ी अविवेकपूर्ण परम्पराएँ चिंता का विषय हैं।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय में मनाया गया 10 दिवसीय गणेशोत्सव एक आदर्श था। इसने विद्यार्थियों को अपनी भक्ति के दिग्दर्शन का सुनहरा अवसर प्रदान किया। यह भक्ति केवल भगवान के प्रति नहीं थी, बल्कि देशभक्ति भी थी। इन दस दिनों में विद्यार्थियों ने रंगोली, भजन, क्विज़, नाटक, दीप सज्जा, परिसर की सज्जा, अतिथि सम्मान के माध्यम से अपनी उत्कृष्टता को प्रदर्शित किया। उनकी प्रस्तुतियों में भारत की अखण्डता, सांस्कृतिक विविधता में एकता, स्वच्छ भारत-समृद्ध भारत, वैज्ञानिकों की अद्वितीय सफलता-चंद्रयान-2 की झाँकी दिखाई दी।

गणेशोत्सव का शुभारंभ कुलपति श्री शरद पारधी एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती अनुराधा जी ने दीप प्रज्वलन कर किया। वे विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन करने प्रतिदिन आते रहे। 11 सितम्बर को प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय जी एवं श्रीमती शेफाली पण्ड्या ने एवं अंतिम दिन श्रद्धेय डॉ. साहब ने पधार कर उत्सव की गरिमा बढ़ाई। प्रत्येक दिन अलग-अलग संकाय के विद्यार्थियों को व्यवस्थाएँ सौंपी गईं। सभी संकायों ने स्वस्थ स्पर्धा करते हुए एक से एक बेहतर प्रस्तुति दी।

भगवान गणेश की स्तुति कर रहे देव संस्कृति विवि के विद्यार्थी

कला कौशल प्रशिक्षण सत्र

व्यावसायिक स्तर की दक्षता प्रदान करने के लिए शांतिकुंज ने की नई पहल

1 सितम्बर 2019 से शान्तिकुञ्ज में एक नए **एक मासीय पाठ्यक्रम** 'कला कौशल प्रशिक्षण सत्र' का शुभारंभ हुआ। इस एक मासीय प्रशिक्षण सत्र में बाँसुरी वादन, मूर्ति निर्माण, डॉइंग-पेण्टिंग, ग्लास पेण्टिंग, क्राफ्ट, डिज़ाइनिंग, सुन्दर हस्ताक्षर जैसी कलाएँ सिखाई जाती हैं। इस शिविर का उद्देश्य परिजनों को व्यावसायिक स्तर का सैद्धांतिक एवं प्रायोगिक प्रशिक्षण दिया जा रहा है। प्रथम सत्र में 40 विद्यार्थी विभिन्न कलाओं का प्रशिक्षण ले रहे हैं।

शान्तिकुञ्ज और गायत्री परिवार के परिजन लोकमंगल की भावना से अपनी कला का लाभ अन्य जरूरतमंदों को देने के लिए

बाँसुरी वादन सीखते शिविरार्थी कार्यकर्त्ता एवं बच्चे

उत्साहित रहते हैं। ऐसे ही एक परिजन श्री उमाकांत रामटेके के मार्गदर्शन में यह शिविर चल रहा है।

- अगला सत्र 1 अक्टूबर 2019 से आरंभ होगा।
- मिशन के अन्य अनुभवी परिजन भी इस प्रकार अपनी कला और योग्यता से जरूरतमंदों को लाभान्वित कर सकते हैं।

प्रांतीय प्रतियोगिता में जीते 3 स्वर्ण पदक

तीनों विद्यार्थी राष्ट्रीय कुश्ती प्रतियोगिता के लिए चयनित

8 सितम्बर विकास नगर, जिला देहरादून में बालक-बालिकाओं की 'द्वितीय अण्डर 23 फ्री स्टाइल राष्ट्रीय चैम्पियनशिप(कुश्ती)' आयोजित हुई। देव संस्कृति विश्वविद्यालय के छात्र-छात्राओं ने इसमें भागीदारी करते हुए अपने विश्वविद्यालय को गौरवान्वित किया। देसंविवि के चार विद्यार्थियों ने इसमें भाग लिया, जिनमें से अपने-अपने वर्गों में वरीयता प्राप्त तीन विद्यार्थी राष्ट्रीय स्तर पर प्रतियोगिता के लिए चुने गए हैं।

इस प्रतियोगिता में उत्तराखंड के कुल 187 छात्र-छात्राएँ शामिल हुए। देसंविवि की किरण कुमारी ने 50 कि.ग्रा. भार वर्ग में, शुभ्रा निषाद ने 72 कि.ग्रा. भार वर्ग में तथा भवानी सिंह ने 86 कि.ग्रा. भार वर्ग में स्वर्ण पदक प्राप्त किये। तीनों का राष्ट्रीय स्तर पर होने वाली आगामी प्रतियोगिता के लिए चयन किया गया है।

देसंविवि. के स्वर्ण पदक विजेता विद्यार्थी

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुंज, हरिद्वार स्वामी श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी) श्रीरामपुरम, गायत्री नगर, शान्तिकुंज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा अंबिका प्रिंटर्स एण्ड बाइंडर्स, 656क देहराखास, पटेल नगर, इंडस्ट्रिअल एरिया, देहरादून-248001 (उत्तराखंड) में मुद्रित।
संपादक- वीरेश्वर उपाध्याय।
पता :- शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड), पिन 249411. फोन-(01334) 260602 फैक्स-(01334) 260866
संपर्क सूत्र :- फोन-9258369725 (प्रातः 10 से सायं 5 बजे तक) email : pragyaabhiyan@awgp.in
समाचार संपादन : news.shantikunj@gmail.com

Publication date: 27.09.2019
Place: Shantikunj, Haridwar
RNI-NO.38653/ 80
Postel R.No.
UA/DO/DDN/ 16 / 2018-20
Licenced to Post Without Prepayment vide
WPP No. 04/2018-20